चकमक

दिसम्बर, 2000

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 10.00



साँप का चलना



● ज्योति केन, दसवीं, गौतमपुरा, इन्दौर, म.प्र.



● सुबिमिये, तीसरी, इटालिन, अरुणाचल प्रदेश

एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

के 183 वें अंक में



विशेष

साँपों की चाल

साँप जितने सीधे दिखते हैं, उनकी चाल उतनी ही टेढ़ी होती है। कैसी और कितने तरह की होती है साँप की चाल? कैसे और किस-किस तरह से चलते हैं वे? जानना चाहो तो पढ़ो पेज 8 से।



2–3 दिसम्बर 1984

यह तारीख भोपाल वाले तो कभी नहीं भूल सकते। जो कुछ इस रात में घटा वह इतना भयानक था कि और भी लोगों को इसे याद रखना चाहिए।

आवरण : 'एनिमल बायोलॉजी' से साभार।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

दिसम्बर के इस महीने के साथ यह साल यानी 2000 खत्म हो रहा है। सही मायनों में अब शुरू होगी नई सदी। बीतती हुई इस सदी की कई अच्छी-बुरी घटनाएँ हमें आने वाले समय के लिए सबक की तरह याद रखनी चाहिए!

विज्ञान की बदौलत हमने कितना कुछ पाया है और कितना कुछ गवाँया भी है। पिछले कुछ सौ सालों में विज्ञान के आविष्कारों ने मनुष्य के जीवन को ही बदल डाला है। जहाँ एक तरफ सुख-सुविधाएँ मिली हैं, तो दूसरी तरफ विज्ञान के गलत या लापरवाही भरे उपयोग ने जीवन को त्रासदी भरा बना दिया है। जापान में हिरोशिमा-नागासाकी और अपने ही देश का भोपाल गैस कांड इसके जीते-जागते गवाह हैं। इनसे सबक लेना ज़रूरी है।

दिसम्बर की 10 तारीख सारी दुनिया में मानव अधिकार दिवस के रूप में याद की जाती है। यह दिन अन्य बातों के अलावा यह भी याद दिलाती है कि हर मनुष्य को अपने धर्म, उसके विश्वासों और आस्थाओं के साथ स्वतंत्रता से जीने का अधिकार है। लेकिन इसी महीने की 6 तारीख अब हमें यह भी याद दिलाती है कि मनुष्य के इस अधिकार को चोट पहुँचाई गई है। कुछ साल पहले 6 दिसम्बर को ही एक मस्जिद तोड़ दी गई थी। और फिर देश भर में मार-काट मच गई थी। बेवजह कितने ही लोगों का खून बहा। अब एक तरफ तो हम कहते हैं कि अलग-अलग धर्म एक ही ईश्वर या खुदा की इबादत के तरीके हैं और दूसरी तरफ हम एक-दूसरे के पूजाघर तोड़ देते हैं। क्या यह सही है? क्या इन्सान की ज़िन्दगी सचमुच इतनी सस्ती है?



तुमने भी इन बातों पर गौर किया होगा। क्या आने वाले दिन, माह, साल, सदी ऐसे ही होंगे? या फिर इनसे बेहतर? कैसे बनेंगे बेहतर? यह सब तुम्हारे सोच पर ही निर्भर है। हमें भी बताना!

● चकमक

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-16 अंक-6 दिसम्बर, 2000

सम्पादन	वितरण
विनोद रायना	कमल सिंह
राजेश उत्साही	मनोज निगम
कविता सुरेश	अशोक रोकड़े
टुलटुल विश्वास	**सहयोग**
विज्ञान परामर्श	राकेश खत्री
सुशील जोशी	सुशील शुक्ल

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-1/25
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016
(म. प्र.)
फोन : 463380

कवर का काग़ज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक ख़र्च हमारा

चंदा, मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।



प्यारी तितली

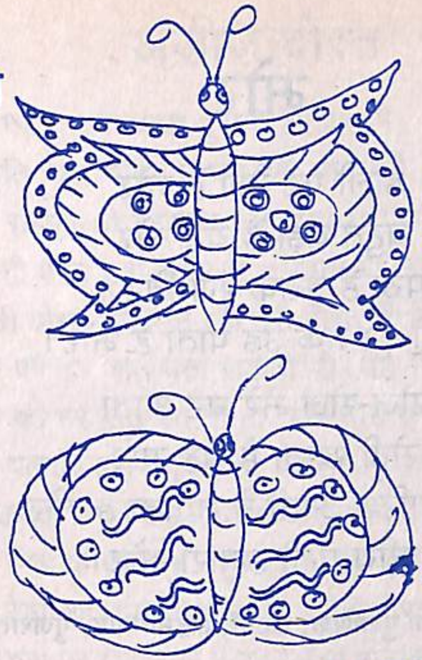
प्यारी तितली
न्यारी तितली
मेरे आँगन में
आ री तितली।

काली तितली
पीली तितली
रंग बिरंगी
न्यारी तितली

चली तितली
उड़ी तितली
छोटे बगीयन में
पली तितली।

मेरे बगीयन में
आ री तितली
मधुकर पराग
खा री तितली।

● विनोद कुमार प्रजापति,
ग्यारहवीं, उज्जैन, म.प्र.



● ऋचा मनु,
फरीदाबाद, हरियाणा



● अश्विनी नामदेव, सातवीं,
मण्डलेश्वर, म. प्र.

मोर

डाली पर बैठा है मोर
बहुत बड़ा है यह मोर
पंख हैं इसके रंग-बिरंगे
थोड़ी दूर तक उड़ पाता है मोर।

रोज-रोज मेरे घर आता
रोटी खाता है यह मोर
जब बारिश आती है नाचता है मोर
राष्ट्रीय पक्षी हमारा मोर।

● मालविका पुराणिक, छठवीं, अहमदाबाद, गुजरात



● कमलेश आठिया, तीसरी, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.



● राजू लोधी, पाँचवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.



● कामिनी कुशवाह, सातवीं, ठनगाँव, खरगोन, म. प्र.

पेड़ कहता है

पेड़ कहता है कि मुझे मत काटो
पेड़ कहता है कि मुझे मत बाँटो।
मैं तुम्हें धूप से बचाऊँगा
मैं तुम्हें ठंडी छाँव दिलाऊँगा।
पेड़ कहता है
मैं तुम्हें फल दूँगा
मैं तुम्हें जल दूँगा।

● समर्थ आर्य, तीसरी, भोपाल, म. प्र.



● राधिका पाटीदार, सातवीं,
ठनगाँव, खरगोन, म. प्र.

अज़ीज़ दोस्त

यह घटना एक साल पुरानी है। जब मैं जागृति बाल मंदिर में पढ़ रही थी। मेरी एक सहेली थी जिसका नाम हेमा था। जो मेरी ही कक्षा 7वीं में मेरे साथ पढ़ती थी। हम दोनों बहुत अच्छी दोस्त थीं। एक वही मेरी दोस्त थी जिसे में अपने दिल की हर बात बता सकती थी। वह भी मुझे अपने दिल की हर बात बताती थी। एक दिन उसने मुझे एक बात बताई। उसने कहा मेरे मोहल्ले में एक लड़की थी वह उसकी बहुत अच्छी दोस्त थी। उसने मुझे उससे एक दिन मिलाया था। वह बहुत ही सुन्दर थी। और उसका नाम रेखा था। हम लोग एक दिन मेरी दोस्त हेमा के घर गए। वहाँ पर हम लोगों ने बहुत हँसी मजाक किया, फिर हम लोग नाचे-गाए और उसने हमें नाश्ता कराया। फिर हम अपने घर लौट गए।

● प्रियंका गुप्ता आठवीं, देवास, म.प्र.

बस में घटना

एक दिन मैं और मेरी मम्मी मेरे मामा के यहाँ महिदपुर (सीटी) जा रहे थे। वहाँ जाते-जाते हम तीन-चार गाँव पार कर गए। महिदपुर जाने का समय 3 घण्टे लगते हैं। उसी समय जब हम घोसला पहुँचे तो घोसले के थोड़ी आगे हमारा एक्सीडेंट हो गया। जिस समय वह घटना हुई उस समय हमें यह भी पता नहीं था कि बस पेड़ से टकराकर उलट गई है। उस बस के कंडक्टर व ड्राईवर पहले से ही भाग गए थे। हमें उस घटना में कुछ नहीं हुआ। सिर्फ मेरी मम्मी को हाथ में थोड़ी-सी खरोंच आई थी। उस बस में बैठे यात्रियों को भी कुछ चोटें पहुँची। यात्रियों के सामान भी कुछ-कुछ खो गए थे।

● किशोर जनोलिया, आठवीं, देवास, म.प्र.



● जोशीला कुशवाह, सातवीं, महेश्वर, खरगोन, म. प्र.



मेरा पन्ना

दीदी

एक छोटी चुहिया से डरती है
एक बड़ी चुहिया
छोटी चुहिया तो सचमुच चुहिया है
लेकिन है बहुत छोटी
बड़ी जो चुहिया है
वह सचमुच चुहिया नहीं है
लेकिन है बहुत बड़ी
फिर भी डरती है
एक छोटी चुहिया से
एक बड़ी चुहिया।

● शिवाँक, चौथी, दिल्ली

मामा का गाँव

मेरे मामा का गाँव बहुत अच्छा है मेरे को वहाँ बहुत अच्छा लगता है। मैं वहाँ पहली बार गया जब मुझे आने का ही दिल नहीं कर रहा था। मगर मम्मी ने मेरी बात नहीं मानी। मैंने वहाँ बहुत-सी हरियाली देखी।

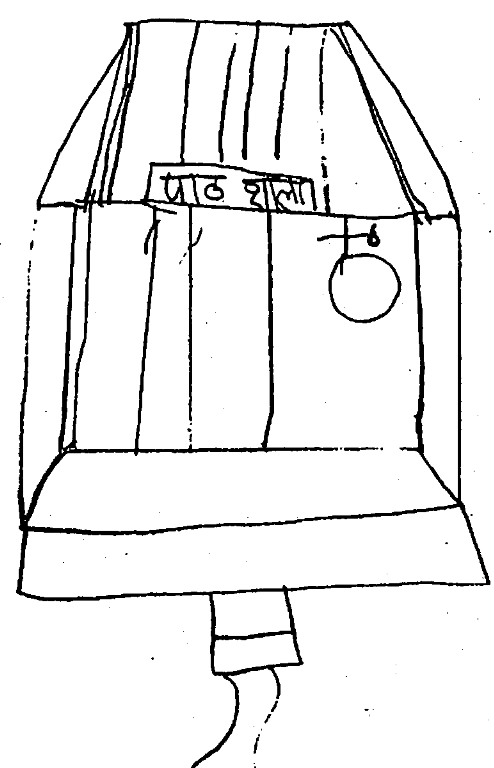
मैं एक झाड़ पर चढ़ने लगा तो उस पर से मेरा पाँव फिसल गया। और मुझे पाँव में चोट आ गई। घर पर गया तो मम्मी ने बहुत डाँटा। मैं शर्म के मारे झुक गया। और मैंने मम्मी से माफी माँगी कि अगली बार से झाड़ पर नहीं चढूँगा। ऐसा कहकर मैं चला गया।

● विजय देवलिया, देवास, म. प्र.

पूजा या पढ़ाई

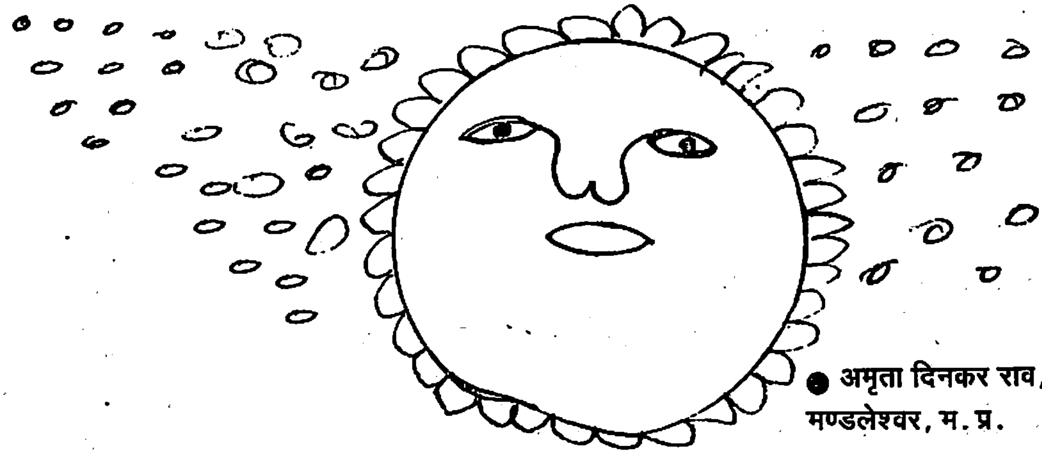
एक बार की बात है कि मेरी दीदी स्कूल जा रही थी। तो मेरी मम्मी ने कहा कि बेटे आज स्कूल नहीं जाना। तो दीदी ने कहा कि नहीं मैं तो स्कूल जाऊँगी। तो मम्मी ने कहा नहीं आज माँ लक्ष्मी की पूजा होना है इसलिए नहीं जाना। दीदी बोली मेरी तिमाही परीक्षा है सो मुझे जाना है। और मेरी दीदी गई तो बस नहीं आई। दीदी ने पापा से कहा कि मुझे साइकिल से छोड़ दो। पापा ने कहा कि साइकिल खराब हो गई है। इतने में बस आ गई। तो मेरी दीदी चली गई। फिर जब स्कूल में पहुँची तो सभी लोग परीक्षा में बैठ चुके थे।

● सितारा बेगम, आठवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.



● रोशनी व्याम, दूसरी, भोपाल, म. प्र.





● अमृता दिनकर राव, मण्डलेश्वर, म.प्र.

मेरी माँ

एक दिन मैं और मेरी बहन एक ही कमरे में पढ़ रहे थे। मैंने अपनी दीदी से लाल स्याही का पेन माँगा। तो मेरी दीदी ने इन्कार कर दिया और बोली अभी मैं लिख रही हूँ। मैंने दीदी का पेन चुपके से उठा लिया। तो दीदी ने एक चाँटा मार दिया। मैं ज़ोर से रोने लगी। इतने में मम्मी किचिन में से आ गईं। और बोलीं क्या नाटक कर रखा है तुम लोगों ने। और एक-एक चाँटा दोनों को मार दिया। हम लोगों का स्कूल का टाइम हो गया और हम लोग चले गए। जब हम लोग स्कूल से पाँच बजे आए तो मम्मी दरवाजे पर खड़ी इन्तजार कर रही थी। फिर बोली चलो दोनों खाना खा लो। तो मैंने कहा मुझे भूख नहीं । मम्मी की आँख में आँसू आ गए और बोलीं मैंने भी नहीं खाया।

● फूलबाई आठिया, मड़देवरा, छतरपुर, म.प्र.

गाड़ी

एक चली बैलों की गाड़ी।
उसमें बैठे दो लाड़ा-लाड़ी।।
दुल्हा भैया सूटबूट में।
दुल्हन पहने सुन्दर साड़ी॥
हाँकने वाला था अनाड़ी।
बढ़ा रखी थी उसने दाढ़ी॥
जैसे चेहरे पर हो झाड़ी।
लटक रही थी उसकी नाड़ी॥
सामने आई अचानक पाढ़ी।
दुल्हेजी की उलट गई गाड़ी॥

● दिनेश काशिव, सतवास, म.प्र.

एक घटना

एक बार मैं अपनी मौसी के यहाँ गया था। मैं वहीं पर रुका हुआ था। और मेरी मम्मी मेरी नानी के यहाँ थी। रात के समय मैं सो रहा था। एकाएक कुछ समय बाद मेरे पिताजी मेरी मौसी के यहाँ आए और कहा, घर पर आग लग गई है। तभी मैंने देखा रात के दो-ढाई बज रहे हैं। मेरी मौसी और मौसाजी कहीं जा रहे थे। तभी मेरी दोनों बहनें भी उठीं और मौसाजी से मैंने कहा मैं भी चलूँगा। घर कम से कम 15 मिनिट की दूरी पर था। उन्होंने मना कर दिया, मैं अकेला ही गया। मेरे मामू अरब से हज करके आए थे। उनके सामान की पैकिंग खुली ही नहीं थी। सभी सामान जल गया था। यह घटना मेरे जीवन की अत्यधिक कष्टदायी घटना थी जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता।

● इमरोज शेख, आठवीं, देवास, म.प्र.

चलता बिन पाँव के

मुकेश इंगले



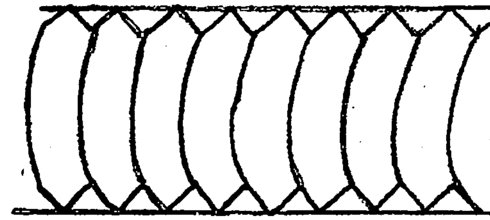
साँप का नाम सुनते ही डर-सा लगता है, है न? देखने पर सिहरन-सी दौड़ जाती है शरीर में। लेकिन सुन्दर चमकीला शरीर लिए लहरदार चाल से चला जा रहा साँप गजब का भी दिखता है। साँपों के बारे में हमारे मन में कई सारे सवाल उठते हैं, जैसे साँप कब सक्रिय होते हैं? उनका भोजन क्या होता है? किस तरह का तापमान और किस प्रकार का परिवेश उन्हें सुहाता है? वे अपनी जीभ क्यों लपलपाते हैं? केंचुली क्यों उतारते हैं? अपना भोजन साबुत ही क्यों निगलते हैं? कैसे चलते हैं? ऐसे अनेक सवाल हैं जो रोचक एवं मज़ेदार भी हैं। इन सबके बारे में हम जानना चाहते हैं। खैर... यहाँ अभी हम साँप की चाल यानी चलने के तरीकों के बारे में चर्चा कर रहे हैं।

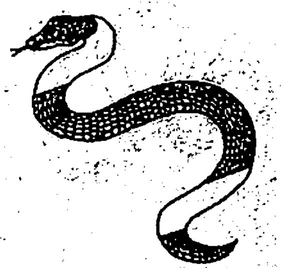
यह तो हम जानते हैं कि साँपों के पैर नहीं होते। लेकिन इसके बावजूद वे चल लेते हैं और ज़रूरत पड़ने पर काफी तेज़ चल सकते हैं। उदाहरण के लिए धामन और लता जैसे (पतले और अधिक लम्बे) साँपों की तेज़ चाल देखने लायक होती है। शायद तुम्हें यह भी पता होगा कि सारे साँप पानी में थोड़ा-बहुत तैर भी लेते हैं। कई सारे साँप ऊँची जगहों पर जैसे पेड़ों और पहाड़ों पर चढ़ भी लेते हैं। भला समुद्री साँप कहाँ पीछे रहने वाले हैं। पानी में अपने शरीर को आगे बढ़ाने के लिए उनमें चप्पूनुमा चपटी दुम मौजूद होती है।

लेकिन साँप चलते कैसे हैं? साँपों की चाल को ठीक ढंग से समझने के लिए जरूरी है उनके शरीर के भीतर झाँक लिया जाए। यानी शरीर की आंतरिक बनावट के बारे में जाना जाए।

रीढ़ की हड्डी और पसलियाँ

साँपों के शरीर को समझने के लिए कल्पना करो रबर की एक बेलनाकार लचीली नली की। साँप रीढ़धारी जीवों की श्रेणी में आते हैं। इनकी अच्छी तरह विकसित रीढ़ की हड्डी में आमतौर पर 100–400 कशेरुका (Vertebrae) होती हैं। ये कशेरुका एक-दूसरे से जुड़कर एक चेननुमा आकृति बनाती हैं। साँप के मुँह वाले सिरे की कुछ कशेरुकाओं को छोड़कर अन्य सब कशेरुकाओं के साथ पसलियों का एक-एक जोड़ा लगा होता है। इन पसलियों का एक सिरा कशेरुका से जुड़ा होने के कारण स्थिर होता है जबकि दूसरा स्वतंत्र होने के कारण हिल-डुल सकता है। पसलियाँ लम्बी, लचकदार, मुड़ी हुई, सिरों पर से नुकीली और आमतौर पर खोखली होती हैं। ये आसानी से आगे-पीछे दोनों ओर गति कर सकती हैं।





साँप पसलियों के इन्हीं सिरों की मदद से चलते हैं। चलने की क्रिया में साँप के पेट के शल्क भी मदद करते हैं। चलने की यह क्रिया हमेशा पेट के बाहरी भागों यानी अगल-बगल के हिस्सों में होती है। उदाहरण के लिए जब कोई साँप ज़मीन पर फैला हुआ है, तो उसके शरीर का नीचे वाला भाग ज़मीन या सतह के सम्पर्क में होगा। साँप चलना शुरू करता है। मान लो पहले शरीर के बाईं बगल की पसलियों का एक हिस्सा आगे की ओर गति करता है इसी समय पेट के शल्कों के किनारे सतह को कसकर थाम लेते हैं। इसके बाद दाईं बगल की पसलियों का हिस्सा उठकर बाईं पसलियों के सामने की ओर आ जाता है तथा पेट के शल्कों के किनारे पुनः सतह को थाम लेते हैं। यह क्रिया लगातार जारी रहती है। इससे साँप के शरीर का पिछला वाला हिस्सा आगे खींचा जाता है और अगला वाला हिस्सा और आगे धकेल दिया जाता है।

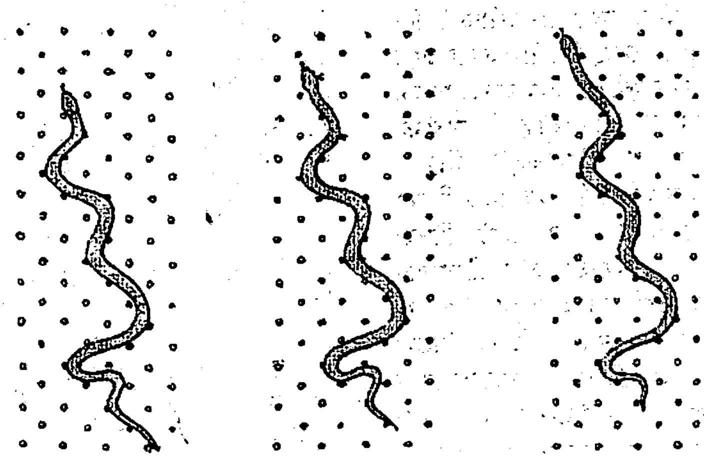
साँपों के चलने की यह सामान्य क्रियाविधि है। लेकिन साँप तो तपते रेगिस्तान से लेकर घने वनों में, पेड़ों और पहाड़ों पर, नदी-तालाब और समुद्र में भी मिलते हैं। विभिन्न जगहों पर रहने वाले साँपों के चलने का अपना एक खास अंदाज होता है।

आमतौर पर साँप चलने के लिए चार तरीकों का इस्तेमाल करते हैं। इनमें से वे कौन-सा तरीका या कोई दो तरीकों का मिश्रण अपनाएँगे, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उनके आसपास का वातावरण कैसा है? पथरीली घासफूस वाली ज़मीन है, रेत है, वे किसी बिल में घुस रहे हैं या पेड़ पर चढ़ रहे हैं। तो आओ, पहले हम चारों तरह की चाल को एक-एक करके समझ लेते हैं।

सर्पण गति

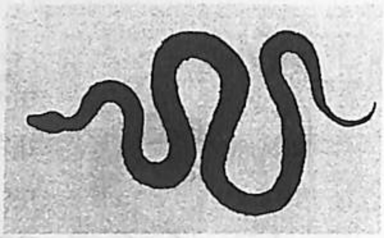
साँपों की आबादी का एक बड़ा हिस्सा सामान्यतः सर्पण गति वाले तरीके का उपयोग करता है। नाग और धामन भी इसी तरह चलते हैं। चलने की यह क्रिया

सर्पण गतिः साँप सर्पण से किस प्रकार चलता है यह समझने के लिए एक बोर्ड पर कुछ खूंटियाँ गाड़ी गईं। फिर बोर्ड पर तीन-तीन इंच की दूरी पर समानांतर रेखाएँ खींची गईं। जब एक साँप को इस बोर्ड पर छोड़ा गया तो वह इन खूंटियों का सहारा लेकर चल पड़ा। ये चलते हुए साँप के एक-एक सेकण्ड के अंतराल पर खींचे गए फोटो हैं। देखो दो सेकण्ड में साँप कितना आगे बढ़ गया है। इसी तरह ज़मीन पर चलता हुआ साँप खूंटियों की जगह पौधों के तनों, घास, पत्थर का सहारा लेता है।



इस प्रकार पूरी होती है :

– साँप ज़मीन पर स्थिर है और उसके शरीर का निचला यानी पेट वाला हिस्सा ज़मीन के सम्पर्क में है।



– साँप अपने शरीर को अंग्रेज़ी के 'एस' अक्षर जैसे मोड़ लेता है यानी कुंडलियाँ बना लेता है। ऐसा रूप बनाने के पीछे उसका मकसद है कि ज़मीन पर कहीं उभरी हुई कुछ स्थिर वस्तुएँ मिल जाएँ (जैसे कोई कंकड़, पत्थर, घास आदि) जिनसे वो अपने शरीर को सटा सके।

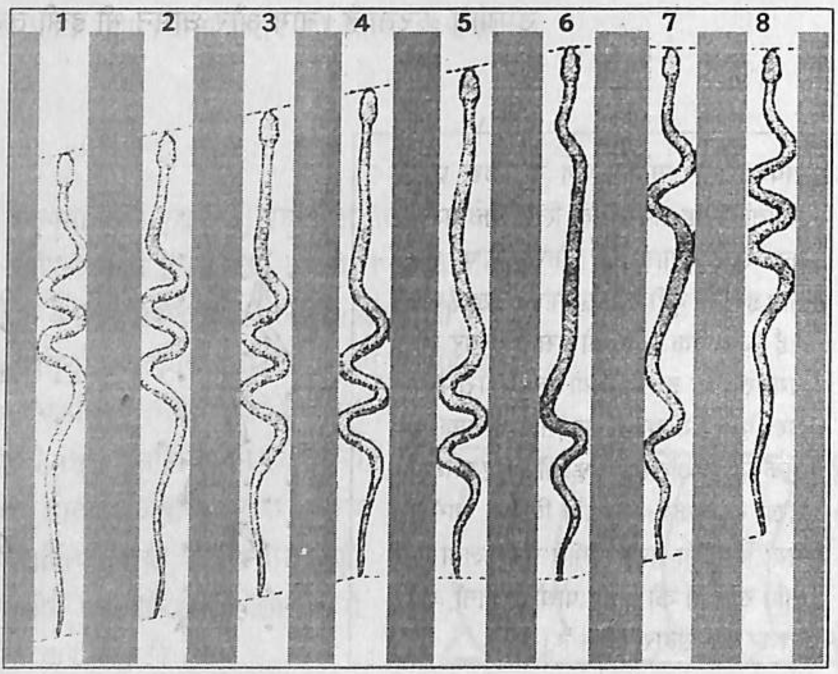
– इसके बाद इन सब वस्तुओं पर ज़ोर लगाकर वह अपने शरीर को आगे की ओर धकेलता है। चूँकि साँप इन स्थिर वस्तुओं की विपरीत दिशा में अपने शरीर को लगातार धका रहा है इसलिए वह लगातार आगे की ओर सरकता जाता है। लेकिन कुंडलियाँ वैसी की वैसी बनी रहती हैं।

– इस तरह की गति के लिए साँप सामान्यतः तीन अथवा चार उभरी हुई वस्तुओं का सहारा लेता है। साथ ही यह ज़रूरी है कि ये सब वस्तु साँप के दाएँ-बाएँ मौजूद हों। तभी वह इनके सहारे अपने आप को धका सकता है।

– कुल मिलाकर साँप का शरीर गतिमान हो जाता है। साँप नए सम्पर्क बिन्दु खोजता हुआ आगे बढ़ता जाता है, क्योंकि पुराने सम्पर्क बिन्दु पीछे छूटते चले जाते हैं।

कन्सर्टिना गति

सँकरे बिलों में रहने वाले या पेड़ पर चढ़ने वाले साँपों को 'सर्पण गति' वाला तरीका रास नहीं आता। क्योंकि एकदम सीधी बिल की दीवारों के सहारे वे अपने आपको



कंसर्टिना गति: यहाँ साँप द्वारा बिल में आगे की ओर सरकने की क्रिया को आठ हिस्सों में दिखाया है। साँप के दोनों ओर बने छायादार हिस्से बिल की दीवार है। इस तरीके में साँप द्वारा बनाई गई कुंडली एक महत्वपूर्ण रोल निभाती है। यही कुंडली बिल की दीवार से सटी रहती है और साँप को गिरने से बचाती है। यहाँ स्थिति पाँच तक साँप के शरीर का अगला हिस्सा आगे की ओर बढ़ रहा है और पिछले हिस्से में नई कुंडलियाँ बनती जा रही हैं जो शरीर को थामे हुए हैं। 6, 7, 8 में साँप अपने शरीर के पिछले हिस्से को खींच रहा है और शरीर के अगले हिस्से में कुंडली बनाकर उसके सहारे अपने-आप को थामे हुए है।



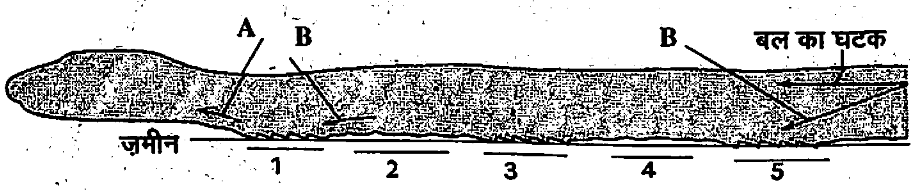
आगे की ओर धक्का नहीं दे सकते। हरा लता, लाल धामन, अलंकृत आदि ऐसे ही साँप हैं। अपनी ज़रूरत के हिसाब से इन्होंने एक नया तरीका अपना लिया है जिसे क्सर्टिना कहा जाता है।

इस गति से बिल में आगे बढ़ने के तरीके का वर्णन चित्र के साथ पढ़ो। इस तरीके में साँप का पूरा शरीर 'सर्पण गति' के समान एक साथ गतिमान नहीं होता बल्कि साँप अपने शरीर को क्रमशः खींचकर और सिकोड़कर आगे की ओर बढ़ाता है।

सीधी रेखा में गति

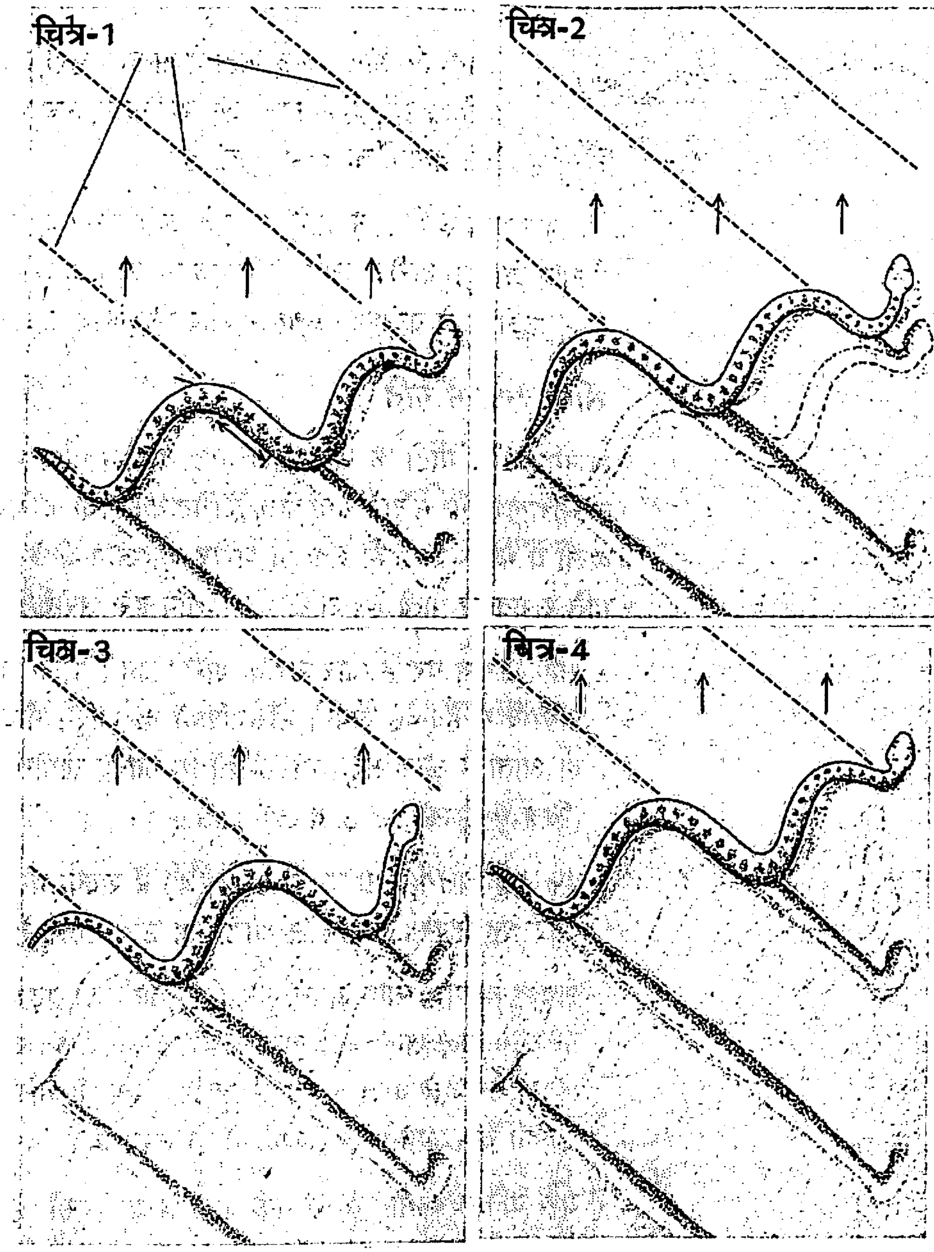
अजगर और माटी के साँप जैसे मोटे, गठीले और भारी शरीर वाले साँपों में लम्बी-लम्बी बलशाली माँसपेशियाँ होती हैं। पेट की त्वचा को पसलियों और कशेरुका से जोड़ने वाली ये माँसपेशियाँ ही साँप के शरीर को आगे-पीछे खींचती हैं, जिससे सीधी रेखा में गति संभव हो पाती है। आओ देखें साँप इस तरीके से कैसे चलता है:

- साँप ज़मीन पर है और उसके शरीर का निचला यानी पेट वाला हिस्सा ज़मीन के सम्पर्क में है। वह अपनी माँसपेशियों के ज़रिए नीचे के कुछ शल्कों को पास-पास ले आता है और संकुचित शल्कों के ज़रिए ज़मीन पर अपनी पकड़ जमा लेता है। (चित्र में हिस्से 1, 3 व 5)
- इन संकुचित हिस्सों के बीच (2, 4) में शल्क काफी दूर-दूर खुले-खुले रहते हैं। और यह हिस्सा ज़मीन से थोड़ा-सा उठा रहता है।
- अगले चरण में साँप अपनी गर्दन को आगे को बढ़ाता है जिससे संकुचित हिस्से '1' के आगे वाले शल्क खिंचकर ऊपर की ओर उठ जाते हैं (A)। उसी समय संकुचित हिस्से के पीछे वाले शल्क से जुड़ी बलशाली माँसपेशियाँ (B) खींचकर कुछ और शल्कों को ज़मीन के सम्पर्क में ले आती हैं।
- यही प्रक्रिया ज़मीन के सम्पर्क वाले अन्य हिस्सों (3,5) में भी होती है। हर संकुचित हिस्से में आगे के शल्क खिंचकर ऊपर उठ जाते हैं और पीछे की ओर से कुछ शल्क खिंचकर ज़मीन के सम्पर्क में आ जाते हैं।
- इस तरह से गर्दन को आगे बढ़ाने पर जो प्रक्रिया शुरू होती है उसके ज़रिए साँप लगातार बिना रुके आगे बढ़ता जाता है। यह क्रिया लगातार जारी रहती है। साँप के पेट की त्वचा इल्ली (केटरपिलर) की भाँति ऊपर-नीचे खिसकती नज़र आती है और साँप एक सीधी लाइन में आगे बढ़ता जाता है।



- चलने का यह तरीका धीमा ज़रूर है, लेकिन इसमें साँप का शरीर एक समान गति से आगे की ओर सरकता रहता है।

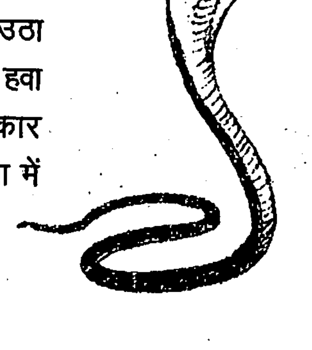
इस तरीके की विशेषता यह है कि इसमें साँप सरल रेखा में गति करता है। अगर ज़मीन के ऊपर उभरी हुई वस्तुएँ न हों तो भी आगे बढ़ सकता है। कभी-कभी शिकार के पीछे लगे हुए साँप भी यही तरीका अपनाते हैं, ताकि शिकार को उनकी भनक न लगे।



पार्श्व कुण्डलन गति

रेतीले इलाकों में पाए जाने वाले साँप जैसे भारत का फुर्सा (सॉ-स्केल्ड वाइपर) आदि इस तरीके को अपनाते हैं। यह तरीका रेतीली ज़मीन पर साँप को तेजी से और लगातार चलने में मदद करता है। ज़मीन भुरभुरी होने से उस पर साँप की पकड़ ठीक से बन नहीं पाती। न ही 'सर्पण गति' के लिए यहाँ उभरे हुए सम्पर्क बिन्दु मौजूद होते हैं। यहाँ की ज़मीन जल्द ही गर्म हो जाती है। ऐसे में साँप के लिए अपना पूरा-का-पूरा शरीर सतह से सटाकर चलना नुकसानदेह होगा। पार्श्व कुण्डलन गति में ये साँप अपने शरीर की गोल-गोल गुत्थियाँ बनाकर उचकते हुए चलते नज़र आते हैं। इस विधि को समझने के लिए दिए गए चित्रों को वर्णन के साथ जोड़कर देखो।

चित्र-1: साँप रेतीली सतह पर है। शरीर के कुछ हिस्से ज़मीन के संपर्क में हैं और कुछ उठे हुए हैं। सिर अभी ज़मीन पर टिका ही है। सिर के पीछे का कुछ हिस्सा उठा हुआ है, साँप का बीच का हिस्सा रेत पर टिका हुआ है। अंत की तरफ का हिस्सा हवा में है और पूँछ ज़मीन पर है। दाहिनी-नीचे की ओर वे निशान हैं जो साँप ने इस प्रकार चलते हुए बनाए हैं। ऊपर-बाईं तरफ की टूटी रेखाएँ दिखा रही हैं कि इस दिशा में आगे वाले निशान बनेंगे।





चित्र-2 : जहाँ पर साँप ने अपना सिर रखा था वहाँ अंग्रेज़ी के 'जे' की घुंडी जैसा निशान बन गया है। अगर साँप की पूँछ को देखें तो समझ में आएगा कि उसने इसे हवा में उठा लिया है और अपने पीछे वाले हिस्से को बीच वाले निशान पर रख रहा है। इसी तरह बीच वाले निशान पर से आगे वाले हिस्से को उठा रहा है। सिर वाले निशान पर अपने शरीर का आगे वाला हिस्सा रख दिया है – और सिर को गति की दिशा में आगे बढ़ा रहा है।

चित्र-3 : लगभग पूरी ही पूँछ दूसरे निशान पर आ गई है। पूरी प्रक्रिया दोहराने की वजह से आगे वाला काफी हिस्सा आगे बढ़ गया है। सिर हवा में उठा हुआ है।

चित्र-4 : आगे वाला हिस्सा आगे बढ़ गया है। अब फिर से एक और निशान की जरूरत है। इसलिए साँप अपना सिर रेत पर टिका देता है, जिससे एक बार फिर 'जे' की घुंडीनुमा निशान बन जाता है।

इस गति की एक विशेषता यह है कि साँप के चलने के निशान साँप की गति की दिशा में नहीं होते। बल्कि इन दोनों के बीच लगभग 60 अंश का कोण होता है। केवल चलने के निशान देखें तो बिल्कुल भी समझ में नहीं आता कि कैसे बने होंगे ये? क्या साँप ने एक से दूसरे निशान पर छलाँग लगाई होगी?

दूसरी विशेषता यह है कि इसमें साँप के शरीर का कोई भी हिस्सा ज़्यादा समय के लिए ज़मीन के सम्पर्क में नहीं रहता। इसलिए तपती हुई रेत पर भी साँप बिना झुलसे चल पाता है। इस चाल में बने हर निशान की लम्बाई ठीक उस साँप की लम्बाई के बराबर होती है। सोचो ऐसा क्यों होता है?

एक से ज़्यादा चाल चले

साँप बहुत तरह से चल सकता है और कभी-कभी तो वह एक से ज्यादा तरीके एक साथ अपना लेता है। ये सब तरीके इतने फर्क हैं कि इन्हें समझना खासा मुश्किल होता है। फिर भी शायद यह लेख पढ़कर तुम कुछ तो समझ पाए होगे कि साँप के चलने के ये चारों तरीके एक-दूसरे से किस तरह अलग हैं। पतले लम्बे शरीर वाले, मोटे भारी भरकम तथा मध्यम व छोटे आकार के साँपों में अपनी-अपनी शारीरिक बनावट और ज़रूरतों के अनुसार चलने के अलग-अलग तरीके विकसित हुए हैं।

अगर कोई बात समझ न आई हो या कोई नया सवाल उठा हो मन में, तो हमें चिट्ठी में लिखना।

संदर्भ-33 में प्रकाशित लेख पर आधारित।

चंदा चार





पापा जी
पूनम को करते
उठा गोद में प्यार।
मम्मी जी
मुनिया को देती
दिन में मिट्ठी चार॥

पूनम फूली
नहीं समाती
पा पापा का प्यार।
मुनिया को
मम्मी लगती है
ममता का अवतार॥



पूनम माँगे
चंदा गोलाकार
मुनिया कहती-
मैं जाऊँगी
उन तारों के द्वार॥



मन मुस्काते
पापा बोले-
होता जिनसे
जगमग घर परिवार।
चाँद सितारों-सी
बेटी से
लगते चंदा चार।।

● गोपी चन्द श्रीनागर

● चित्र : आशीष नगरकर



सीधे चलना

चलो एक खेल खेलते हैं। पर इसके लिए आँगन में चलना होगा। पहले आँगन में बिखरी कुछ चीज़ें हटा लो ताकि गिरने से चोट न लगे।

खेल है आँखों पर पट्टी बाँधकर सीधी रेखा में चलना।

हम सब बारी-बारी से आँख पर पट्टी बाँधकर सीधी रेखा में चलने की कोशिश करेंगे।

एक चॉक या लकड़ी से हर एक के रास्ते को उकेरते जाओ। क्या तुम सीधी रेखा में चल पाए?

क्या सबके चलने की आकृति एक सी बनी?

फिर चक्कर खा गए न!

क्यों होता है ऐसा? तुम भी ढूँढो हम भी कोशिश करते हैं।



चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

क्या तुम भी मेरी तरह कोशिश करने के बाद भी बिल्कुल सीधी रेखा में नहीं चल पाए? बल्कि तुम्हारे चलने के रास्ते को चॉक से उकेरा हो तो शायद एक गोला बन गया होगा।

क्यों होता है ऐसा?

इस सबके लिए हमारे शरीर के दोनों तरफ का असंतुलन ज़िम्मेदार है। हमारे शरीर का बाईं ओर का वज़न दाईं ओर के हिस्से के वज़न से कम होता है।

हमारा ढाँचा भी दाहिनी ओर थोड़ा भारी होता है। जब हम खुली आँख से चलते हैं तो हम सीधी रेखा में चल पाते हैं क्योंकि हमारी दृष्टि इसमें मदद करती है। लेकिन हम आँखें बन्द करके चलते हैं तो? तो धीमे-धीमे शरीर के दाहिने हिस्से के भारी होने के कारण दाहिनी ओर घूमते जाते हैं। और चलते-चलते हम वहीं पहुँच जाते हैं जहाँ से हमने चलना शुरू किया था।

ऊर्जा की बचत



सीमा अपने आँगन में रस्सी कूद रही थी। एक दो तीन चार . . . . पच्चीस तक आते-आते थककर हाँफने लगी। थोड़ी देर के लिए रुक गई। इतने में अनु वहाँ आ गई। उसने कहा, ''चलो खेलते हैं।''

सीमा बोली, ''नहीं, अभी नहीं। मैं बहुत थक गई हूँ। रस्सी कूदने में मेरी बहुत ऊर्जा खर्च हो गई।''

''क्या, क्या कहा, ऊर्जा खर्च हो गई?'' अनु ने हँसते हुए पूछा।

''हाँ हम जो भी काम करते हैं उसमें ऊर्जा तो खर्च होती ही है।''

''हाँ, ठीक है, अब तुम मुझे पढ़ाने मत लगना।'' अनु ने मुँह बनाकर कहा, ''अच्छा चलो अब खेलते हैं।''

''हाँ चलो, छत पर चलते हैं।''अनु ने देखा सीमा की माँ छत पर रखे एक बड़े-से टीन के डिब्बे में कुछ रख रही थीं। वह उनके पास जाकर देखने लगी। उसने पूछा, ''ये क्या है?''

सीमा की माँ ने बताया, ''यह सौर कुकर है। इसमें खाना पकता है।''

''बस, बस माँ, ज़्यादा मत बताओ नहीं तो ये कहेगी कि पढ़ाने लगीं।'' सीमा ने माँ को बीच में टोकते हुए कहा।

अनु ने सीमा को घूरकर देखा। फिर सीमा की माँ से बोली, ''बताओ न मौसी, मुझे जानना है।''

''आजकल बहुत लोग इसका इस्तेमाल करते हैं। देखो यह एक ढक्कन वाले बक्से की तरह है। ढक्कन में अन्दर की तरफ बड़ा-सा आइना लगा है। उसके बाद यह एक पारदर्शी काँच की पट्टी है। बक्से के अन्दर खाना रखने के लिए डिब्बे हैं। बक्से के ढक्कन को खोलकर धूप की तरफ करके रखते हैं। सूरज की किरणें आइने से टकराकर अन्दर वाले काँच पर सीधी पड़ती हैं, और इसकी गर्मी से ही डिब्बों में रखा खाना पकता है।



सामान्यतौर पर किसी और तरह से खाना बनाने में जितनी ऊर्जा खर्च होती है उससे बहुत कम इसमें लगती है। इस तरह इस कुकर में खाना बनाने से ऊर्जा की बचत होती है।''

''ऊर्जा की बचत किसलिए?'' सीमा ने पूछा।

''खाना बनाने के लिए जिस ऊर्जा का इस्तेमाल होता है वो हमें लकड़ी, कोयला, बिजली और गैस आदि के द्वारा मिलती है। ये सभी चीजें धीरे-धीरे कम होती जा रही हैं। और कभी न कभी खत्म हो जाएँगी। इसीलिए अगर हम इनके इस्तेमाल में कुछ कमी कर सकते हैं तो क्या ठीक नहीं होगा?'' माँ बोली।

“खाना बनाने में तो इस तरह कुछ बचत हो सकती है, लेकिन बिजली का इस्तेमाल भी कम हो सके, इसके लिए कोई तरीका होना चाहिए।” अनु ने सोचते हुए कहा।

“उसके भी तरीके हैं। ऐसे लैम्प बनाए गए हैं जो कम बिजली की खपत में ज़्यादा रोशनी देते हैं। इसके अलावा और भी ऐसी कई चीज़ें बनाई गई हैं, जिनसे बिजली और तेल की बचत होती है।

यह तो हुई उन चीज़ों की बात जिन्हें हम इस्तेमाल करते हैं और ऊर्जा बचा सकते हैं। लेकिन सूरज की धूप, हवा की शक्ति और गोबर गैस जैसे स्रोतों से मिलने वाली ऊर्जा को अगर इस्तेमाल किया जाए तो बिजली, तेल की और भी ज़्यादा बचत की जा सकती है। और, अब इनका इस्तेमाल होने भी लगा है।

बिजली की बचत के लिए एक काम तो हम सब आसानी से कर सकते हैं। वो यह कि जब लाइट-पंखे की ज़रूरत न हो तो उन्हें बन्द कर दें। बस हमें इसकी आदत डालनी पड़ेगी।”

“अच्छा मौसी इस कुकर में खाना कब तक



बन जाएगा?” अनु ने सौर कुकर की तरफ देखते हुए पूछा।

“बस बना ही जाता है। तुम खाकर जाना।”

“नहीं, नहीं मौसी, मुझे स्कूल जाने की तैयारी करना है।” कहकर अनु जल्दी-जल्दी छत से नीचे उतरी। उसने देखा सीमा स्कूल के लिए तैयार हो चुकी थी।

उसे देखकर सीमा ने टोका, “क्यों हो गई पढ़ाई पूरी, आज तुम स्कूल तो नहीं चलोगी?” अनु सीमा को मारने दौड़ी। सीमा भागकर आँगन में पहुँच गई, “देख, ज़्यादा मत दौड़ तेरी बहुत ऊर्जा खर्च हो जाएगी।” कहते हुए अनु ने अपने घर की.तरफ दौड़ लगा दी।

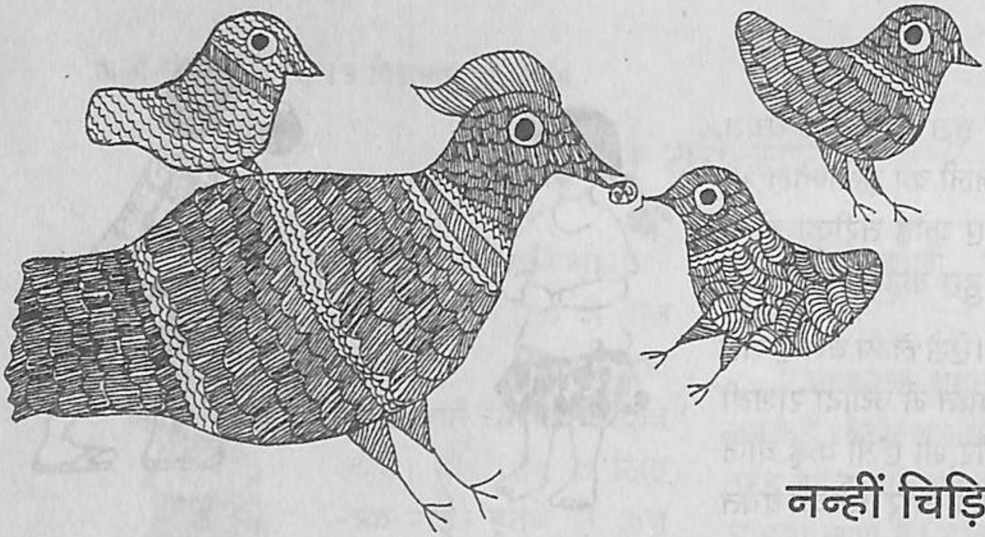
●●●

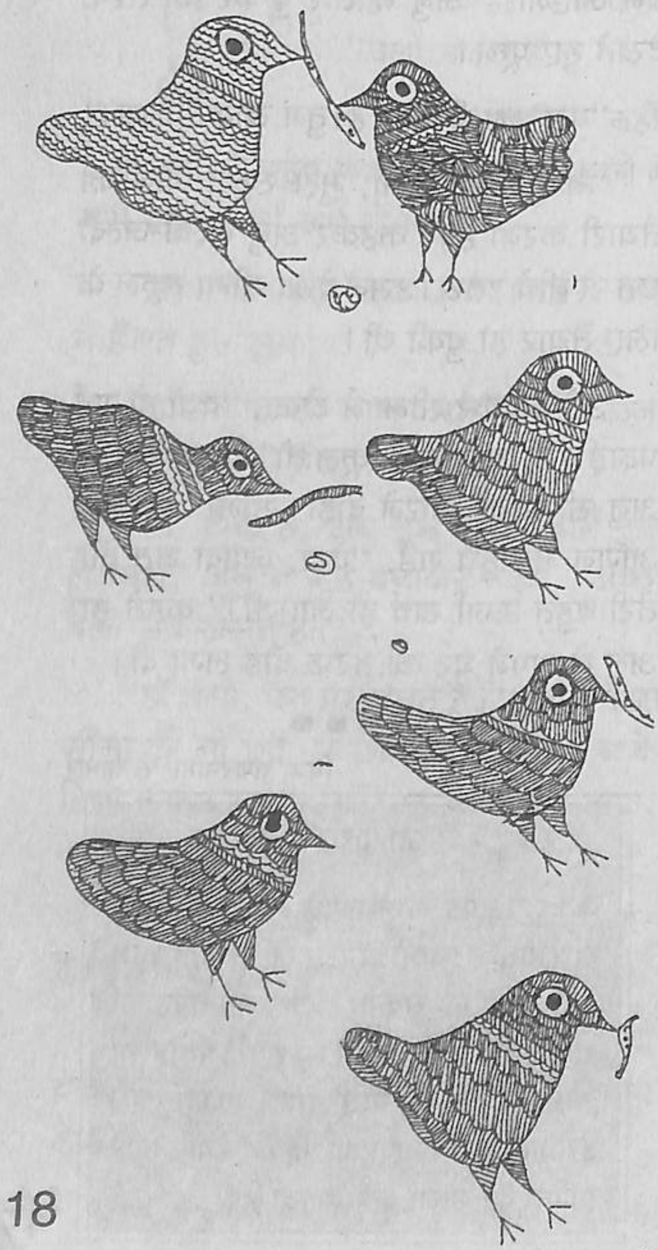
चित्र 'सफरनामा' से साभार



ऊर्जा क्या है?

जब तुम कोई काम करते हो उसमें ऊर्जा खर्च होती है। यानी बिना ऊर्जा के कोई काम नहीं किया जा सकता। किसी भी तरह का काम हो चाहे वो तुम्हारी स्कूल की पढ़ाई का काम हो या घर में झाड़ू लगाने का काम हो। इसका मतलब यह हुआ कि काम करने की शक्ति को ऊर्जा कहा जाता है।





नन्हीं चिड़िया

नन्हीं चिड़िया कुछ तो बोलो,
नन्हा-सा तुम मुँह तो खोलो।
नन्हीं-सी है चोंच तुम्हारी,
नन्हीं-सी आँखें भी खोलो।

नन्हें-नन्हें पैर तुम्हारे,
नन्हें-नन्हें पर भी खोलो।

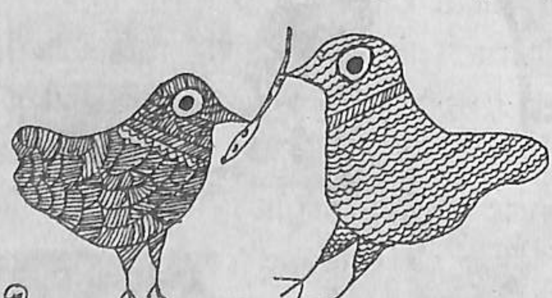
नीलगगन में जब उड़ती हो,
और अधिक नन्हीं-सी लगती हो।

नन्हीं-सी डाली पर बैठी,
मीठा-मीठा गीत सुनाती।

आओ मुझसे बातें करने,
नन्हीं चिड़िया कुछ तो बोलो।

● ज्योत्सना बिष्ट, नौवीं, नैनीताल, उ. प्र.

● चित्र : दुर्गाबाई



खेल

दुनिया भर के

इस बार

एथलेटिक्स



गप्पा या लँगड़ी तो तुमने खेली ही होगी। तो कई बार ऐसा भी हुआ होगा, जब तुम्हारे साथी के लगातार दो घर (खाने) तुम्हारे लिए बन्द हो गए होंगे। अगर तुम छलाँग या कूद लगाने में माहिर हो तब तो बात बन ही जाती। लेकिन अगर तुम एक साथ दो खाने कूदकर पार नहीं कर सकते, तो गए काम से।

सिर्फ गप्पा खेल ही नहीं, इस उछलकूद की लगभग हर खेल में ज़रूरत होती है। फुटबॉल और हॉकी में तो गोलकीपर बीसियों बार दाएँ-बाएँ छलाँग लगाकर गोल बचाता है। क्रिकेट में तो कई खिलाड़ी इसी उछलकूद के कारण लोकप्रिय हैं। कभी इसी कूद से बाऊँड्री के चार रन बचाए जाते हैं तो कभी कैच के लिए छलाँग लगानी पड़ती है।

यह उछलकूद सिर्फ खेलों का हिस्सा भर ही नहीं है। बल्कि यह अपने आप में एक खेल भी है। इसकी गाँव स्तर से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिताएँ भी होती हैं। इसमें न तो खास खेल सामानों की ज़रूरत पड़ती है, न ही इसके अभ्यास के लिए लम्बे-चौड़े मैदान की ज़रूरत है। इस बार हम कूद की चार तरह की प्रतियोगिताओं के बारे में बात करेंगे।

लम्बी कूद

शुरुआत में दौड़कर प्रतियोगी किसी खास बिन्दु से कूद लगाते हैं। जो सबसे ज़्यादा दूरी पार करता है वह विजेता होता है। अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में इसके कुछ और निश्चित मापदण्ड भी होते हैं।

यदि खिलाड़ियों की संख्या आठ से ज़्यादा होती है तो सभी खिलाड़ियों को तीन-तीन मौके दिए जाते हैं। फिर इन मौकों में से सबसे अच्छे प्रदर्शन करने वाले आठ खिलाड़ियों को चुना जाता है। दूसरे दौर में इन आठ खिलाड़ियों को तीन-तीन मौकेऔर दिए जाते हैं इनमें सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाला खिलाड़ी विजेता होता है।

मैदान की नाप-तौल की बात करें तो मैदान में दौड़ने के लिए 45 मीटर लम्बी 1.22 मीटर चौड़ी पट्टी होती है। पट्टी के अन्त में एक रेखा होती है जिसे टेक ऑफ बोर्ड कहते हैं। प्रतियोगी को इस रेखा के पहले ही छलाँग या कूद लगानी होती है।

इस रेखा के पास प्लास्टीसीन या इसी जैसी कोई और मुलायम चीज का बना बोर्ड लगा होता है ताकि अगर प्रतियोगी का पैर टेक ऑफ लाइन के पार पड़े तो प्लास्टीसीन पर उसका निशान आ जाए।

अगर प्रतियोगी के पैर का निशान इस बोर्ड पर पड़ता है तो उसकी कूद को गलत माना जाता है।

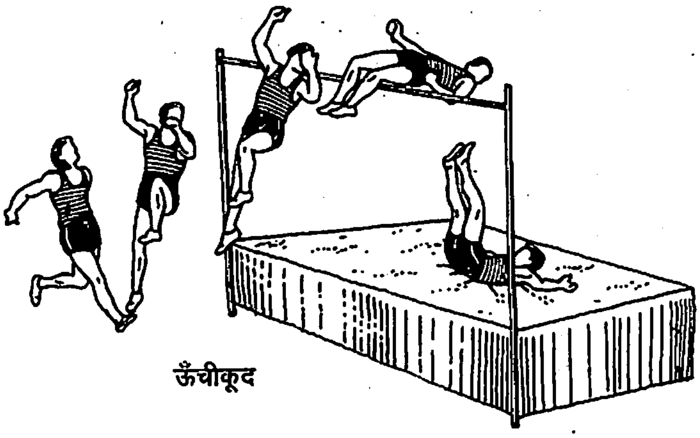
एक प्रतियोगी का प्रदर्शन टेक ऑफ बोर्ड से उस बिन्दु तक की दूरी को माना जाता है जिस बिन्दु को प्रतियोगी ने सबसे पहले छुआ। टेक ऑफ बोर्ड से



लम्बीकूद

कूद क्षेत्र शुरू होता है। यह 9 मीटर लम्बा और पौने तीन मीटर चौड़ा होता है। इस पूरे क्षेत्र पर रेत बिछी होती है मुकाबलों से पहले इस पर पानी सींचा जाता है ताकि प्रतियोगियों को चोट लगने की सम्भावनाएँ कम रहे।

लम्बी कूद में प्रतियोगियों की कूद पर ध्यान रखने के लिए एक रेफरी होता है। दो रेफरी कूद क्षेत्र के पास उसके प्रदर्शन को मापते हैं। एक अन्य रेफरी मुकाबले से पहले पूरे मैदान की जाँच करता है। इस प्रकार पूरी प्रतियोगिता चार रेफरियों की देखरेख में होती है।


ऊँचीकूद

ऊँची कूद

ऊँची कूद में कूद की लम्बाई नहीं बल्कि कूद की ऊँचाई देखी जाती है। इस ऊँची कूद में प्रतियोगियों की छँटनी के नियम लम्बी कूद जैसे ही हैं।

ऊँची कूद में भी लम्बी कूद की तरह दौड़ने के लिए पट्टी बनाई जाती है। यह दौड़पट्टी 15 मीटर लम्बी होती है। ऊँची कूद एक क्रॉस बार के ऊपर से लगाई जाती है। यह क्रॉस बार दो सीधे और मज़बूत खम्भों के बीच लगा होता है। ये दो खम्भे 4.02 मीटर दूरी पर लगे होते हैं।

हर चक्र के बाद क्रॉस बार ऊपर उठाया जाता है। क्रॉस बार कितनी ऊँचाई पर हो, यह प्रतियोगी निर्धारित करता है। लेकिन एक बार क्रॉस बार किसी ऊँचाई पर लगाने के बाद हर चक्र में ऊँचाई 2 सेंटीमीटर बढ़ा दी जाती है।

हर चक्र में प्रतियोगी को तीन मौके मिलते हैं। यदि कोई प्रतियोगी तीनों बार असफल हो जाता है तो उस कूद को गलत माना जाता है। अगर कूद के साथ ही या बाद में क्रॉस बार गिर जाता है तो भी उस कूद को गलत माना जाता है। हाँ, कूद से पहले प्रतियोगी को कम से कम तीन फुट से ज़्यादा दौड़ना होता है।

त्रिकूद

कूद प्रतियोगिताओं की एक और प्रतियोगिता है त्रिकूद। त्रिकूद तीन हिस्सों में पूरी होती है। ये तीन हिस्से हैं हॉप, स्टेप और जम्प।

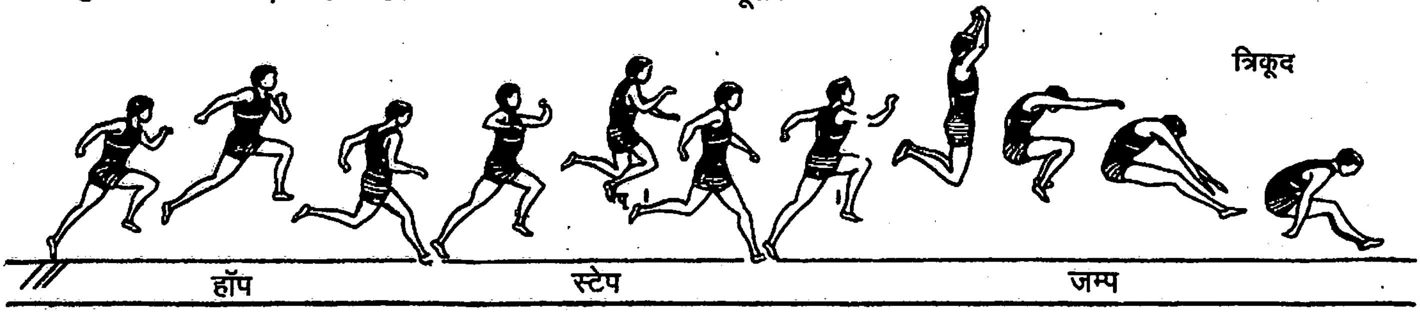
हॉप यानी एक पैर से उछाल भरना। स्टेप में प्रतियोगी ज़मीन पर पैर टेकता है। जम्प में फिर लम्बी उछाल लेता है। इसमें भी छँटनी नियम लम्बी कूद और ऊँची कूद की तरह होते हैं।

दौड़पट्टी 13 मीटर लम्बी होती है। इस दौड़पट्टी में प्रतियोगी एक पैर आगे बढ़ाकर उछाल लेता है। जिस पैर को आगे बढ़ाकर प्रतियोगी उछाल लेता है, ज़मीन पर वही पैर पड़ना चाहिए। इसे ही स्टेप कहते हैं। अगर दूसरा पैर ज़मीन पर पहले आता है तो इसे गलत कूद माना जाएगा।

स्टेप के बाद ही प्रतियोगी उसी लय में टेक ऑफ बोर्ड से लम्बी कूद लगाता है।

त्रिकूद में लम्बी कूद की तरह ही खिलाड़ी का प्रदर्शन मापा जाता है। यानी कूद टेक ऑफ बोर्ड से, जिस बिन्दु को प्रतियोगी ने सबसे पहले छुआ हो, उस बिन्दु तक की दूरी।

त्रिकूद



ओलम्पिक में पहले दो हॉप के बाद एक स्टेप और फिर जम्प को मिलाकर त्रिकूद पूरी होती थी। लेकिन आजकल त्रिकूद एक हॉप, स्टेप और जम्प को मिलाकर पूरी होती है। पुराने समय में इसी तरह का एक खेल 'हॉपस्कॉच' खेला जाता था।

बाँस कूद

बाँस कूद ज़रूरतों से उपजा खेल है। कभी इसका उपयोग गड्ढों, किलों, खाइयों को पार करने में किया जाता था। इसमें एक लचीले बाँस के सहारे कूद लगाई जाती है। गाँवों में आज भी ऐसी प्रतियोगिताएँ होती हैं।

लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बाँस कूद की प्रतियोगिता के नियम काफ़ी फ़र्क होते हैं।

प्रतियोगी इन प्रतियोगिताओं में अपनी पसन्द का बाँस या पोल ला सकता है। वह किसी भी पदार्थ का बना हो सकता है। बस वह मुलायम नहीं होना चाहिए। हाँ, उसकी लम्बाई कितनी भी हो सकती है। उसका व्यास यानी मोटाई भी प्रतियोगी अपने मन मुताबिक रख सकता है।

प्रतियोगी को एक क्रॉस बार, ऊँची कूद की तरह बाँस या पोल की मदद से पार करना होता है।

क्रॉस बार को प्रतियोगी अपने हिसाब से ऊँचा करवा सकता है लेकिन अगर वह तीन बार में भी उस ऊँचाई को पार नहीं कर पाता तो इस कूद को गलत माना जाता है। बाँस कूद में भी कूदते समय क्रॉस बार खम्भों से गिरना नहीं चाहिए।

इन सभी कूदों का फैसला प्रतियोगी के तीन मौकों में सबसे अच्छे प्रदर्शन के आधार पर होता है। लेकिन अगर दो प्रतियोगियों ने एक-सा प्रदर्शन किया है तो विजेता का फैसला प्रतियोगियों के दूसरे सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन को देखकर किया जाता है।

● प्रस्तुति : सुशील शुक्ल

इन्सान की औलाद है

तू हिन्दू बनेगा न मुसलमान बनेगा
इन्सान की औलाद है, इन्सान बनेगा

अच्छा है अभी तक तेरा कुछ नाम नहीं है
तुझको किसी मज़हब से कोई काम नहीं है
जिस इल्म[1] ने इन्सानों को तक़सीम[2] किया है
उस इल्म का तुझ पर कोई इल्ज़ाम[3] नहीं है
तू बदले हुए वक्त की पहचान बनेगा
इन्सान की औलाद है, इन्सान बनेगा
तू हिन्दू बनेगा, न...

मालिक ने हर इन्सान को इन्सान बनाया
हमने उसे हिन्दू या मुसलमान बनाया
कुदरत ने तो बख्शी थी हमें एक ही धरती
हमने कहीं भारत, कहीं ईरान बनाया
जो तोड़ दे हर बंध वो तूफान बनेगा
इन्सान की औलाद है, इन्सान बनेगा
तू हिन्दू बनेगा, न....

नफ़रत जो सिखाए वो धरम तेरा नहीं है
इन्सां को जो रौंदे वो कदम तेरा नहीं है
कुरआन न हो जिसमें वो मन्दिर नहीं तेरा
गीता न हो जिसमें वो हरम[4] तेरा नहीं है
तू अम्न का और सुलह का अरमान बनेगा
इन्सान की औलाद है, इन्सान बनेगा
तू हिन्दू बनेगा, न...

ये दीन के ताजिर[6], ये वतन बेचने वाले
इन्सानों की लाशों के कफ़न बेचने वाले
ये महलों में बैठे हुए कातिल ये लुटेरे
काँटों के एवज़ रूहे चमन बेचने वाले
तू इनके लिए मौत का ऐलान बनेगा
इन्सान की औलाद है, इन्सान बनेगा
तू हिन्दू बनेगा, न ...

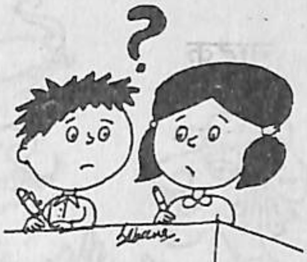
यह गीत 1959 में बनी फ़िल्म 'धूल का फूल' से है। इसे जाने माने चरित्र अभिनेता मनमोहन कृष्ण और बाल कलाकार डेज़ी इरानी पर फ़िल्माया गया था। मनमोहन कृष्ण फ़िल्म में एक अध्यापक हैं। बारिश की एक रात में उन्हें रास्ते में एक लावारिस बच्चा रोता हुआ मिलता है। वे उसे घर ले आते हैं। वे नहीं जानते कि बच्चा किस धर्म का है? वे उसे किस नाम से पुकारें? यही सब सोचते हुए वे बच्चे को आशा भरा यह गीत सुनाते हैं।

गीतकार साहिर लुधियानवी ने अपने इस गीत में उस समय की सामाजिक परिस्थितियों को उभारने की कोशिश की है। गीत सुनकर ऐसा लगता है जैसे यह आज की ही बात है।



फ़िल्म : धूल का फूल
गीतकार : साहिर लुधियानवी
गायक : मोहम्मद रफी
संगीतकार : एन. दत्ता

1 शिक्षा, 2 विभाजित, 3 कोई बात अपने या दूसरे पर लागू करना, 4 खुदा का घर, 5 सौदागर या व्यापारी



यह शृंखला काफी समय से छप रही है। इसमें तुम कई लोगों के स्कूली जीवन और शिक्षकों की बातें पढ़ चुके हो। अपने स्कूली जीवन की बातें सभी लोग एक-दूसरे को सुनाते हैं। यदि तुमने अभी तक अपने अनुभव नहीं भेजे हों तो जल्द भेजो। साथ ही अपने माता-पिता और बड़ों से कहो कि वे चकमक के लिए अपने शिक्षकों के बारे में लिखें।

हर अच्छाई पर मुझे विश्वास है

श्री ओ. पी. मूंदड़ा हमारे इतिहास व नागरिक शास्त्र के टीचर थे। नवमीं से ग्यारहवीं तक उन्होंने हमें इतिहास पढ़ाया। पढ़ाने का ढंग तो उनका रोचक व प्रभावशाली था ही। मेरी याद में कभी उन्होंने किताब हाथ में नहीं ली। वे कक्षा में घूम-घूमकर कहानी की तरह विषय को ऐसे समझाते कि हमें हमेशा मूंदड़ाजी के पीरियड की प्रतीक्षा रहती। चाहे नेपोलियन का रोचक पाठ हो या राष्ट्रपति पर महाभियोग जैसा उबाऊ विषय। उनके द्वारा पढ़ाया गया हर तथ्य हमारे दिमाग में अंकित हो जाता।

यह सब तो हर विद्यार्थी के लिए था। पर मेरे लिए विशेष बात यह थी कि मैं ठेठ ग्रामीण परिवेश से थी। मेरे कपड़े भी ज़्यादा अच्छे नहीं हुआ करते थे। पिताजी का सादा जीवन उच्च विचार वाला कड़वा घोल तो हमें पीना ही था। उस पर घर से 7–8 कि.मी. दूर स्कूल था। रोज़ाना पैदल जाना होता था। ये सब बातें मुझे बहुत अखर जातीं, यदि मूंदड़ा सर का स्नेहमय प्रोत्साहन न होता। उनका रहन-सहन उच्च स्तर का था। जब तक वह पढ़ाते कमरा महकता रहता था। जब वे मेरे सही उत्तरों पर शाबाशी देते और सबको बताते कि मैं किस तरह दूर से पढ़ने आती हूँ तब मेरी सारी हीनता दूर हो जाती। मेरा तन-मन उत्साह से भर जाता। कहने की ज़रूरत नहीं कि शिक्षकों का प्रोत्साहन छात्रों को बड़ा सहारा देता है।

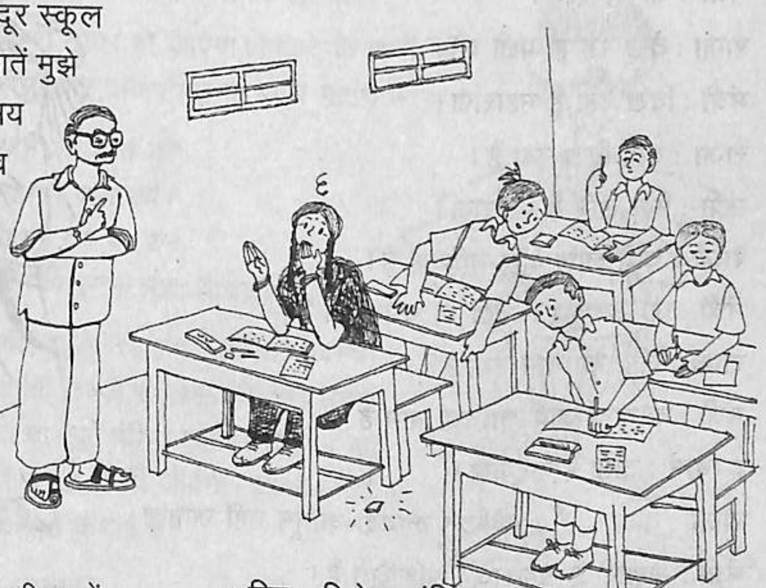
एक बार शरारत या ईर्ष्यावश किसी ने परीक्षाओं के दौरान मेरे पास नकल की पर्ची डाल दी और सर से कह दिया कि मैंने नकल की है। पर्ची देखकर तो मैं घबरा गई, पर मूंदड़ा जी ने दृढ़ता से कहा, "गिरिजा, नकल कर ही नहीं सकती मुझे विश्वास है।"

उनके इस विश्वास ने मुझे जो शक्ति दी वह आज भी मेरे पास है। हर अच्छाई पर मुझे आज भी विश्वास है चाहे लोग उसे नकारते रहें।

आज मूंदड़ा जी शिक्षा विभाग में उच्चाधिकारी हैं। समय के साथ लोग उनके साथ कई बातें जोड़ें पर मेरे लिए आज भी वो उतने ही श्रृद्धेय व विश्वास से परिपूर्ण हैं।

● गिरिजा कुलश्रेष्ठ, ग्वालियर

(गिरिजा जी स्वयं शिक्षिका हैं। वे चकमक की नियमित लेखिका भी हैं।)



● चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

नाटक

तोता बोला टें–टें–टें

हरे रंग का अद्भुत तोता।
बड़ा मूर्ख था दिनभर सोता।
कभी पाँव से सिर खुजलाता।
टुकुर-टुकुरकर आँख घुमाता।
उछल-फुदककर उड़ता फिरता
हरे रंग का अद्भुत तोता,
टें–टें–टें–टें करता-करता
राजमहल के द्वार पे आया।

(एक तोता मंच पर आता है। मंच पर घूम–घूमकर आवाज़ लगाता है।)

तोता : मीठू-मीठू....।

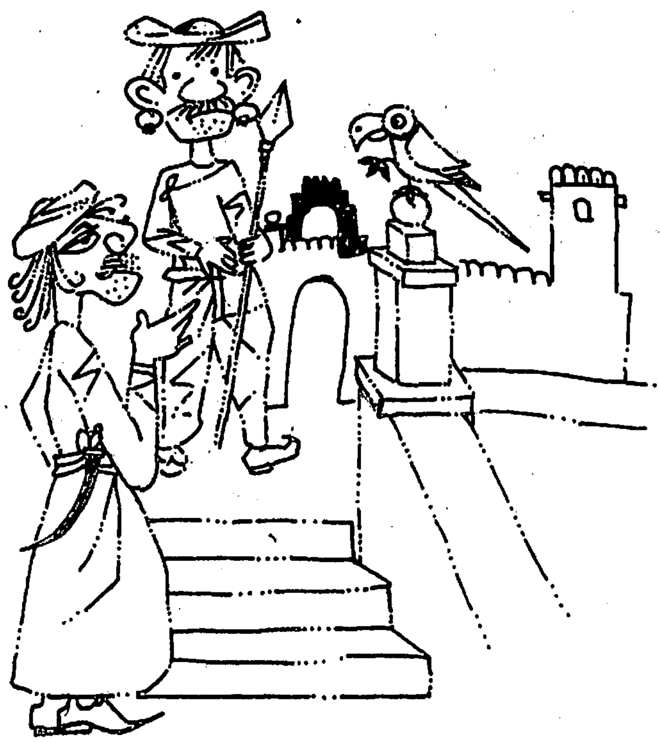
मंत्री : अरे यह तो बड़ा प्यारा पक्षी है। आवाज भी बड़ी अनोखी है। टिटीयांटू-टिटियांटू। जरूर विद्या प्राप्त करने आया होगा। वरना राज दरबार में इस पक्षी का क्या काम। ऐसे विचित्र जीव को देखकर, राजा भी खुशी से नाच उठेंगे। **(दरबान से)** दरबान, देख रहे हो पक्षी को।

दरबार : देख रहा हूँ, मंत्री जी।

मंत्री : तो फौरन इसे पकड़ लो और राज दरबार में राजा के सामने प्रस्तुत हो।

दरबान : जैसी आज्ञा मंत्रीजी।

(दरबान पक्षी को लेकर राजा के सामने जाता है।)



राजा : मंत्री।

मंत्री : जी महाराज।

राजा : देख रहे हो पक्षी को।

मंत्री : दिख रहा है महाराज।

राजा : क्या दिख रहा है।

मंत्री : एक जीव है महाराज।

राजा : चोंच लाल और नुकीली है।

मंत्री : जी सरकार। आँखें भी चमकीली हैं।

राजा : जीव का नाम क्या है?

मंत्री : दरबान! जीव का क्या नाम है।

दरबान : तोता है सरकार।

राजा : तोता।....हूँ.... लेकिन कायदा-कानून नहीं जानता।

मंत्री : अज्ञानी है महाराज। अशिक्षित है।

राजा : इस तोते को शिक्षित करो। लेकिन यह अशिक्षित क्यों है?



मंत्री : महाराज, तोता अपना घोंसला साधारण खरपात से बनाता है। ऐसे आवास में विद्या नहीं आती।

राजा : हूँ... सबसे पहले तो इसके लिए बढ़िया-सा पिंजरा बनाना चाहिए। जाओ दरबान पिंजरे की तैयारी करो।

(दरबान चला जाता है।)

मंत्री : यह बड़ी अच्छी बात है महाराज।

राजा : किन्तु एक समस्या है बड़ी विकट।

मंत्री : कैसी समस्या महाराज?

राजा : यह तोता तो हमारे किसी काम का नहीं। इससे लाभ तो कोई है नहीं, बल्कि हानि जरूर होनी है।

मंत्री : कैसी हानि महाराज।

राजा : अरे, यह जंगल के सारे फल खा जाता है और राज मंडी के फल-बाजार में टोटा पड़ जाता है, टोटा। खैर, इसकी शिक्षा-दीक्षा की उचित व्यवस्था करना हमारा कर्तव्य बनता है।

(दरबान के साथ सुनार का प्रवेश)

सुनार : महाराज की जय हो।

राजा : यह कौन-सा जीव है।

मंत्री : जीव नहीं, महाराज सुनार है।

दरबान : यह कहता है तोते के लिए सोने का पिंजरा तैयार कर देगा। ऐसा अनोखा पिंजरा जिसे देखने दूर-दूर से लोग महल में टूट पड़ेंगे। और महाराज की चारों ओर प्रशंसा होगी कि भीखनगढ़ के महाराज तोते को ज्ञानी बना रहे हैं।

राजा : ठीक है, ठीक है। सोने का पिंजरा तैयार होने में कितना समय लगेगा।



सुनार : जी महाराज, बस तीन दिनों में ही पिंजरा तैयार हो जाएगा। पिंजरे के चारों ओर सोने की लटकन झूलेगी। तोतेराम झूलेंगे और राजपंडित के साथ गाएँगे –

इनकी दीवारें चाँदी की, छत सोने की धात की,
पैड़ी-पैड़ी सुन्दर सीढ़ी, उजले हाथी दाँत की।
इसके सतमहले कोठे पर सूयोरानी का घरबार,
सात-सात राजाओं का धन, जिनका रतन जड़ा गलहार।

राजा : कविता अच्छी कर लेते हो सुनार। मंत्री, इनके रहने की उचित व्यवस्था करो। और एक थैली मुहर भी दे दो ताकि जल्दी से जल्दी पिंजरा तैयार हो सके। मंत्री जी, तुरन्त घोषणा करवा दो। जो पंडित ज्ञानी इस जीव को शिक्षित करेगा, उसे सोने की सौ मोहरें ईनाम में दी जाएँगी। जाओ। देखें तोता कैसे ज्ञानी होता है और ज्ञान की बातें करता है।

(सब चले जाते हैं। ढिंढोरची मंच पर आता है।)

ढिंढोरची : सुनो–सुनो–सुनो। इस देश की जनता सुनो।

(मंच पर अलग-अलग दिशाओं से एक–एक करके चार-पाँच नागरिक आते हैं।)

ढिंढोरची : भीखनगढ़ राजदरबार में एक जीव ज्ञान प्राप्त करने के लिए आया है। जो ज्ञानी, ज्ञाता, राज-पंडित, पंडिताई इस जीव को शिक्षित करेगा, राजा उसे सौ सोने की मोहरें ईनाम में देंगे। सुनो–सुनो–सुनो।

(सब मिलकर गीत गाते हैं।)

गीत : *अरे राजा के दरबार में देखो आए पंडित, ज्ञानी,*
देखें, तोते को निहारे, सोने के पिंजरे को ताड़े,
शिक्षा देने आए हैं पंडित घनश्याम जी।
बजे ढोल तासे नगाड़े, बजे बाँसुरिया झाल।
बाजे शंख घड़ियाल तुरहिया, बाजे मृदंग करताल।
भीखनगढ़ के राजमहल में धूम धड़ाका साजे,
बाजे, आए पंडित राज पढ़ाने।
अरे भीखनगढ़ के राजमहल में आए पंडित ज्ञानी
देखें, तोते को निहारे, सोने के पिंजरे को ताड़े
शिक्षा देने आए हैं घनश्याम जी।



पंडित : मीठू।

तोता : टीटू।

पंडित : टटटट–टम।

तोता : टटटट–टम।

पंडित : बहुत अच्छे।

तोता : टउट अट्टें।

पंडित : शाबाश।

तोता : ट्याबाट।

(राजा और मंत्री का प्रवेश)

राजा : मंत्री।

मंत्री : जी, महाराज।

राजा : तोता कैसा है? उसकी शिक्षा कैसी चल रही है?

मंत्री : महाराज। पंडित जी तोते को शिक्षित करने में लगे हैं।

पंडित : यह काम थोड़ी-बहुतपोथियों का नहीं है। अधिक से अधिक नकलची लगेंगे ताकि अधिक से अधिक पोथियों की नकल की जा सके।

मंत्री : इसी उद्देश्य से बाहर से नकलची बुलवाए गए हैं और पोथियों की नकल होने लगी है, महाराज। आखिर एक जीव को शिक्षित जो बनाना है। महाराज, पोथियों की नकल का ढेर नकलचियों ने लगा दिया है। उन्हें अलग से मोहरें दी गई हैं महाराज।

राजा : पढ़ाने का ढंग क्या है?

मंत्री : ढंग तो बहुत सुन्दर है महाराज। पोथियों में से पंडित जी एक-एक पन्ना तोते की चोंच में कलम की नोंक से घुसड़ते जा रहे हैं, और श्लोक भी पढ़ते जा रहे हैं। विद्या दधाति विनयम्, विनयाम् पात्रताम.......

राजा : यह तो बड़ी अच्छी बात है। सुनो मंत्री, सुनार, पंडित और नकलनवीसों को दस-दस मोहरें ईनाम में दे दो।

मंत्री : जो आज्ञा महाराज़।

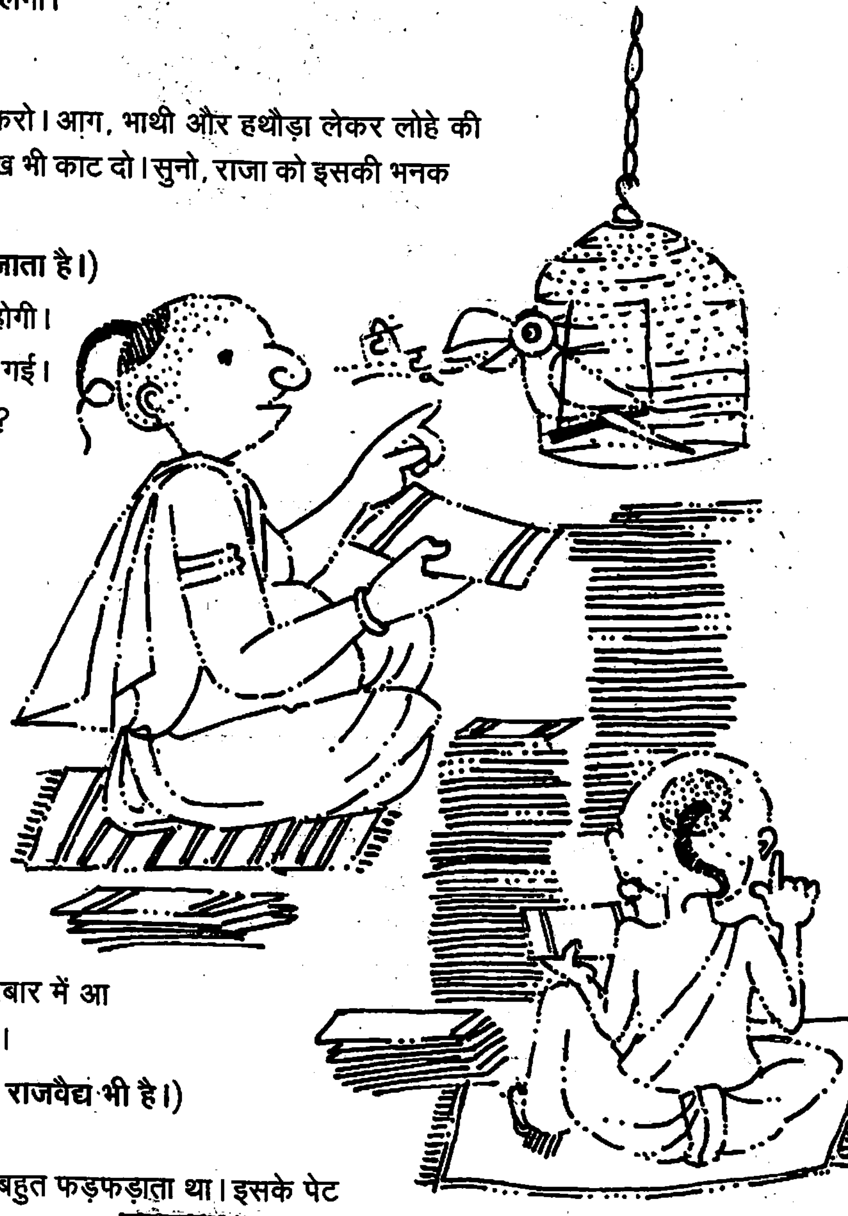
गीत : तोता दिनभर इस रीति से अधमरा होता गया।
टुकुर -टुकुर निहारता ज्ञान की पोथी निगलता गया।
कभी इस अन्याय से अपने पंखों को फड़फड़ाता।
तो कभी चोंच से पिंजरे की सलाखों को कटकटाता।

(तोता पिंजरे में से निकलने की कोशिश करता है)

मंत्री : अरे यह कैसा दुष्ट पक्षी है। शिक्षा अधूरी छोड़कर भागने का प्रयास करता है। राजा को पता लगेगा तो सुनार के साथ-साथ हमें भी मृत्युदंड मिलेगा।

(क्रोध से दरबान को कहता है)

मंत्री : दरबान, फौरन सुनार को हाजिर करो। आग, भाथी और हथौड़ा लेकर लोहे की सॉकल तैयार करो और तोते के पंख भी काट दो। सुनो, राजा को इसकी भनक भी ना लगे। जाओ।



(सब चले जाते हैं। मंत्री राजा के पास जाता है।)

राजा : मंत्री, तोते की शिक्षा पूरी हो गई होगी।

मंत्री : जी महाराज, तोते की शिक्षा पूरी हो गई।

राजा : अब भी वह उछलता-फुदकता है?

मंत्री : बिल्कुल नहीं, महाराज।

राजा : अब भी उड़ता है?

मंत्री : ना, कतई नहीं।

राजा : गाता है?

मंत्री : नहीं।

राजा : दाना न मिलने पर अब भी चिल्लाता है?

मंत्री : ना, नहीं।

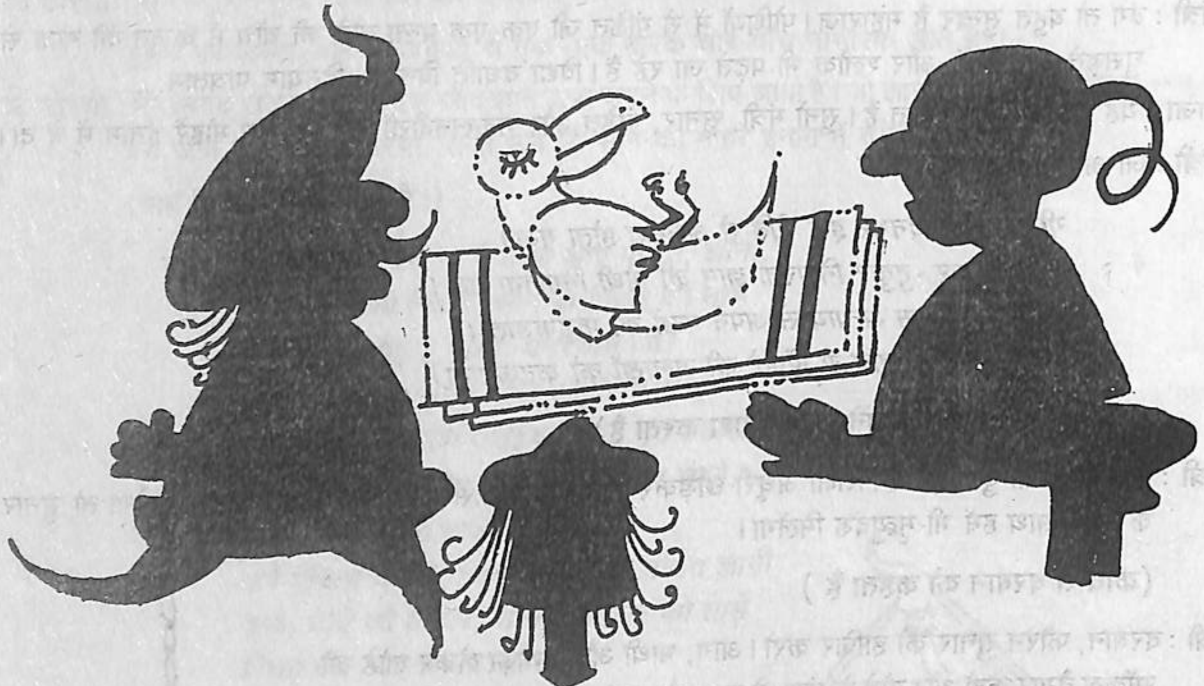
राजा : मेरा मन करता है कि मैं चलकर तोते को देख लूँ।

मंत्री : महाराज। दरबान पिंजरा लेकर दरबार में आ ही रहा है। साथ में राजवैद्य भी हैं।

(दरबान पिंजरा लेकर आता है। साथ में राजवैद्य भी है।)

राजा : अरे, यह तो लहुलुहान है।

मंत्री : महाराज। इसके डैने काट दिए हैं। बहुत फड़फड़ाता था। इसके पेट



में पोथियों के सूखे पन्ने खड़खड़ाने लगे हैं महाराज।

राजा : राजवैद्य, देख रहे हो तोते को।

राजवैद्य : देख रहा हूँ महाराज।

राजा : तोता कैसा मुरझाया-सा अकड़ा पड़ा है। आखिर क्या हुआ है तोते को?

राजवैद्य : महाराज। तोता तो मर गया।

राजा : मर गया! कैसे राजवैद्य जी।

राजवैद्य : तोते की शिक्षा पूरी हो गई है महाराज। इसीलिए मरा।

राजा : (**सोचते हुए**) शिक्षा पूरी हो गई और मर गया।

राजवैद्य : हाँ महाराज! मरा ज़रूर है, किन्तु यह बड़े गर्व की बात है कि तोता शिक्षित होकर मरा है।

राजा : मंत्री।

मंत्री : जी, महाराज।

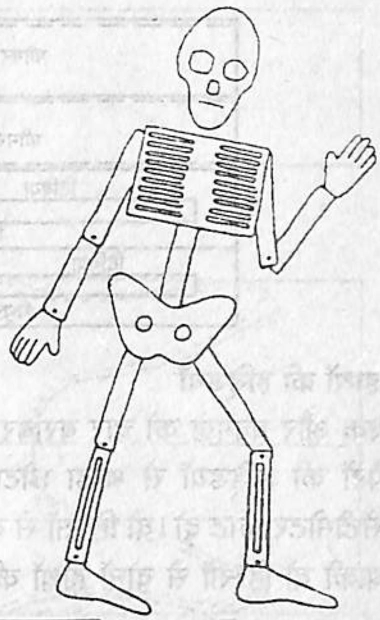
राजा : तोते को सम्मान के साथ पिंजरे सहित दफ़न करने की तैयारी करो और राजकीय शोक की घोषणा कर दो। जाओ।

गीत : *हरे रंग का अद्‌भुत तोता,*
बड़ी चैन की नींद में सोता।
ना अब पाँव से सिर खुजलाता,
ना टें–टें कर शोर मचाता।
सोने के पिंजरे में देखो।
हरे रंग का अद्‌भुत तोता।

● कहानी : रवीन्द्र नाथ ठाकुर
● नाट्य रूपान्तर : प्रशान्त चटर्जी
● चित्र : धनंजय



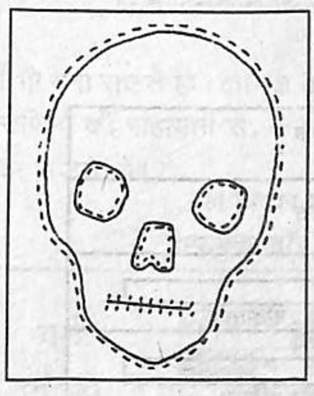
कागज़ का कंकाल



कागज़ का कंकाल बनाने के लिए 21 से. मी. चौड़े, 30 से. मी. लम्बे आठ कागज़ के पन्नों की आवश्यकता होगी। इन्हें तुम अपनी बड़ी कापी में से ले सकते हो या फिर अखबार में से काट सकते हो। शरीर के प्रत्येक अंग को चित्र में दिखाए अनुसार कागज़ के पन्नों में से काटो। अन्त में नतीजा चित्र में दिखाए कंकाल जैसा दिखेगा।

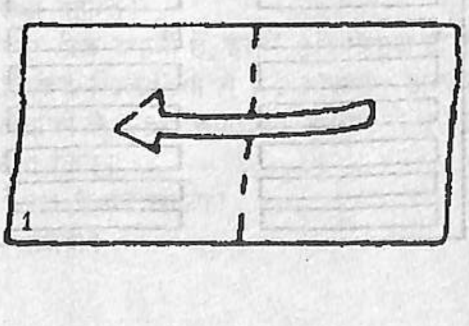
खोपड़ी

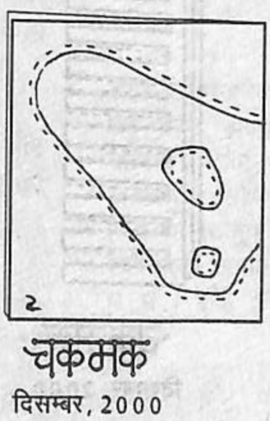
एक कागज़ पर यह चित्र बना लो। चित्र बनाने के बाद बिंदियों वाली रेखा पर से काटो। दाँत और मुँह को कागज़ बिना हटाए ही काटो।

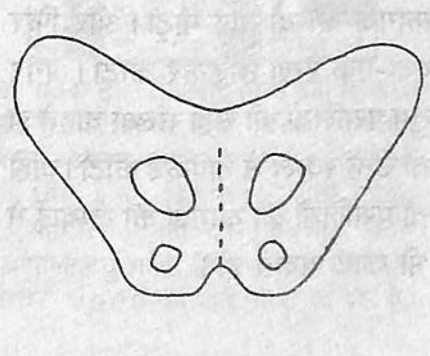


वस्ति (पेल्विस) और कंधे के पुट्ठे

पहले एक कागज़ को बीच से मोड़ लो। फिर दूसरे चित्र की तरह आकृति बनाओ। फिर कागज़ पर बनी आकृति को बिंदियों वाली रेखा पर से काटो।
दूसरे कागज़ पर इसी तरह कंधों की आकृतियाँ काटो।



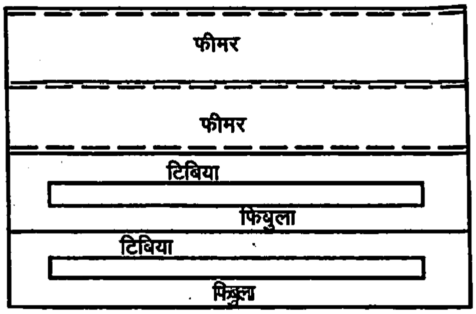


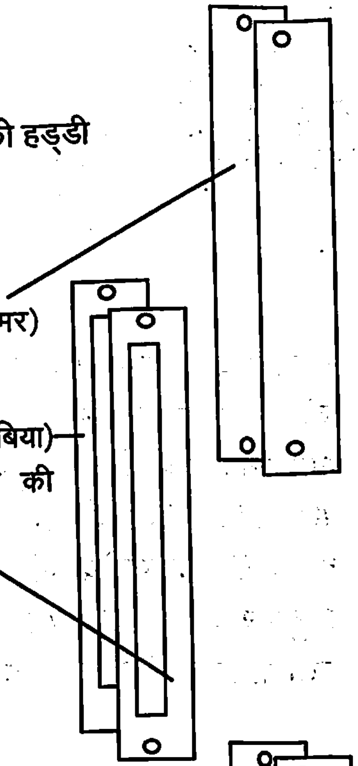


हाथ और पैर

पैरों की हड्डियाँ

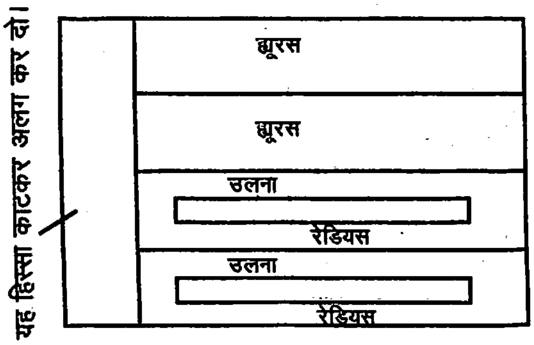
एक कागज़ को चार बराबर हिस्सों में मोड़ लो। दो हिस्सों से दोनों पैरों की जाँघ की हड्डी बनाओ। बाकी दो हिस्सों से दोनों पैरों की घुटने के नीचे की हड्डियाँ बनाओ।

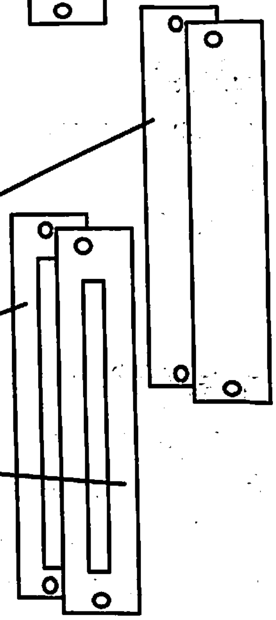




हाथों की हड्डियाँ

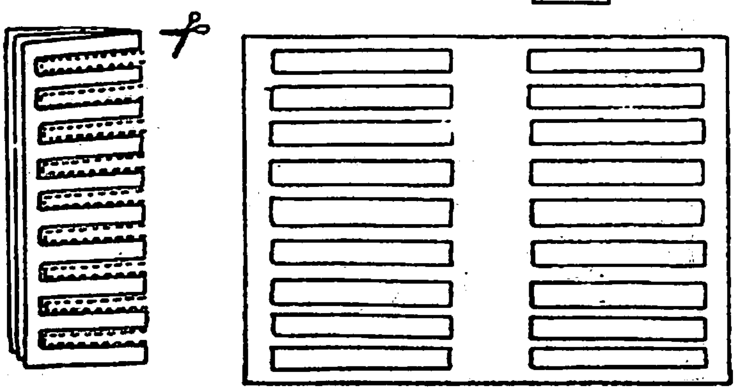
एक और कागज़ को चार बराबर हिस्सों में मोड़ लो। हाथों की हड्डियों को पैरों की हड्डियों से थोड़ा छोटा करने के लिए कागज़ को लगभग एक सेंटीमीटर काट दो। दो हिस्सों से दोनों हाथों की भुजाओं की हड्डियाँ बनाओ। बाकी दो हिस्सों से दोनों हाथों की आगे की हड्डियाँ बनाओ।





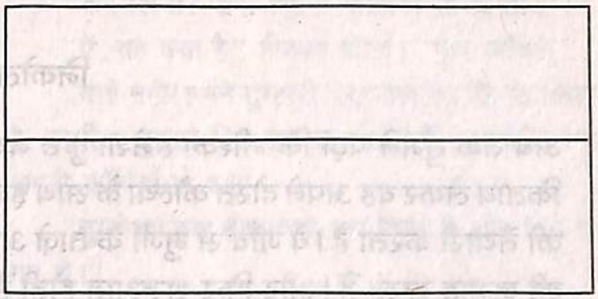
पसलियों का पिंजड़ेनुमा घेरा

कागज़ को दो बार मोड़ो। और फिर एक-एक रेखा छोड़कर काटो। अगर तुम पसलियों की सही संख्या चाहते हो तो उन्हें स्केल से नापकर काटो। चाहो तो पसलियों को कागज़ की लम्बाई में भी काट सकते हो।



रीढ़ की हड्डी

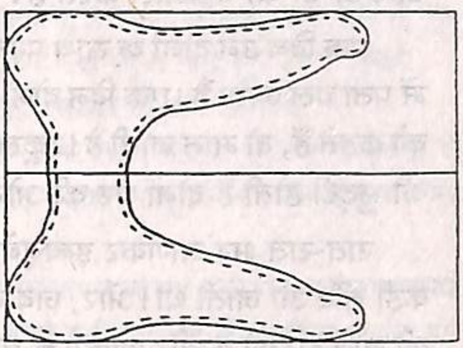
रीढ़ की हड्डी को मजबूती प्रदान करने के लिए कंकाल के दोनों ओर एक-एक कागज़ की मोटी पट्टी लगाएँगे। इसके लिए एक कागज़ में से पट्टियाँ काटो।



हाथ और पैर के पंजे

पैरों की हड्डियाँ एक कागज़ से, और हाथों की हड्डियाँ दूसरे कागज़ से काटो। एक कागज़ को मोड़ो और उसमें से हाथ का चित्र बनाओ। दूसरे कागज़ पर पैर का चित्र बनाओ। बिंदियों पर से काटो।





कुछ अन्य विचार

तुम चाहो तो कागज़ की आकृतियों में हाथों और पैरों की हड्डियाँ भी बना सकते हो। कागज़ के हाथ-पैरों को मोड़कर आकार दे दो। वो और सजीव दिखने लगेंगे। तुम पिनों से या स्टेपिलों की सहायता से, कंकाल के सभी हिस्सों को आपस में जोड़ सकते हो और फिर उसे किसी चटाई पर लटका सकते हो।

मूल विचार एवं चित्र : *वी. एस. ओ.*

***हैण्डबुक फॉर साइंस टीचर्स* से साभार**

नवम्बर 2000 के माथापच्ची के हल

1. कुछ समीकरण ये हो सकते हैं.

   12 63= 21 36

   26 93= 62 39

   24 63= 42 36
2. गधे के पास 5 घोड़े के पास 3 कंचे होंगे।
3. बड़ा वाला तरबूज।
4. जितना चाहे . . .क्योंकि रस्सी का दूसरा छोर कहीं बँधा नहीं है।
6. रमा ठीक कहती है, इसमें 38 त्रिभुज ही हैं।
8. क्रिकेट खिलाड़ियों ने 420 रुपए, डॉक्टरों और लेखकों ने 350 रुपए बैंक कर्मियों ने 210 रुपए खर्च किए।
9. 120 है वह संख्या।
10. पाँचवीं।

वर्ग पहेली 111 का हल

ला	ल	च		प्र	ला	प		अं
		म	हा	भा	र	त		धे
र	म	न		क		न	ह	र
क	द			र			व	
बा	द	शा	ह		ल	बा	ल	ब
	गा			पा			दा	ढ़
खु	र	च		नी		आ	र	ती
ल		प	रो	प	का	र		
ला		ला	ग	त		सी	ल	न

सही हल भेजने वाले पाठक हैं – तीजबाई (पता नहीं लिखा)। मनु पाण्डे, अल्मोड़ा, **उ. प्र.**। तुषार शर्मा, **दिल्ली**। निखिल गोविन्द, पटना, **बिहार**। अंशुल कुमार अग्रवाल, बेलखेड़ा, जबलपुर; अभिषेक सिंह क्षत्री, बिलासपुर; गीता पटेल, पिपरिया (अनूपपुर) शहडोल; कृति चौबे, उज्जैन; विनय स्वास्तिक, भोपाल; चम्पालाल कुशवाह, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, **म. प्र.**। इन्हें दिसम्बर, 2000 का अंक भेजा जा रहा है।

धारावाहिक : दसवीं किश्त

प्यारा कुनबा



निकोलाई नोसोव

अब तक तुमने पढ़ा कि मीश्का हमेशा कुछ नया करना चाहता है। मुर्गी-पालन नाम की एक किताब लेकर वह अपने दोस्त कोल्या के साथ इन्क्यूबेटर (मुर्गी के अण्डे को सेने वाली मशीन) बनाने की तैयारी करता है। वे गाँव से मुर्गी के ताज़े अण्डे लाते हैं। फिर इन्क्यूबेटर बनाने के लिए सामान की जुगाड़ करते हैं। और फिर शुरुआत होती है मुर्गी के अण्डों को सेने की। इसमें एक बड़ा काम था ताप को एक निश्चित डिग्री पर बनाए रखना। मीश्का और कोल्या बारी-बारी से सोते-जागते हैं और अण्डों की देखभाल करते हैं।

एक दिन उन दोनों के साथ पढ़ने वाला कोस्त्या, मीश्का के घर आता है। उसे इन्क्यूबेटर के बारे में पता चल जाता है। एक दिन दोनों दोस्त स्कूल जाते समय माया से इन्क्यूबेटर की देखभाल करने को कहते हैं, वो मान जाती है। स्कूल में मीश्का को इन्क्यूबेटर की चिंता होती रहती है। जैसे ही स्कूल की छुट्टी होती है दोनों घर की ओर भागते हैं। घर जाकर देखते हैं सब ठीक है।

रात-रात भर जागकर इन्क्यूबेटर की देखभाल करने के कारण मीश्का को हर कभी और हर कहीं नींद आ जाती थी। और, जब मीश्का सो रहा होता तो कोल्या उसकी तस्वीर बनाता। मीश्का की सोते हुए की तस्वीर कोल्या ने अपनी कक्षा के लड़कों को दिखाई तो उन्होंने मीश्का की बहुत हँसी उड़ाई। मीश्का ने गुस्सा होकर कोल्या से कहा कि अब से इन्क्यूबेटर की देखभाल तुम करो।

कुछ दिन कोल्या ने देखभाल की। इसी दौरान एक बार ताप बहुत नीचे चला गया। पर जल्द ही उसने ताप को सही स्थिति में पहुँचा दिया। लेकिन उसने यह बात किसी को बताई नहीं। पर उसे मन में यह ज़रूर लगता रहा कि अब अण्डों में से चूज़े नहीं निकलेंगे।

इन्क्यूबेटर पर ध्यान देने के कारण दोनों पढ़ाई नहीं कर पा रहे थे। उन्हें कम नम्बर मिलते हैं। उनकी कक्षा के सभी साथी छुट्टी के बाद इन दोनों दोस्तों को रोककर कारण पूछते हैं। स्कूल का ही एक साथी सबको बता देता है कि ये लोग इन्क्यूबेटर में लगे हैं। फिर क्या था सभी मिलकर ताप की निगरानी करने में मदद देने को तैयार हो जाते हैं। अब आगे . . . .

मददगारों ने मदद की

खाने के बाद लगभग सारा ही प्रकृति-प्रेमी मंडल हमारे रसोई-घर में एकत्र हो गया। सबको इन्क्यूबेटर दिखाया और उसके बारे में जानकारी दी – गर्मी देने का साधन कैसे काम करता है, ताप की देखरेख हम कैसे करते हैं, और नियत समय पर अण्डों को कैसे पलटते हैं। इसके बाद हम टाइम-टेबुल बनाने के लिए बैठे। इसके पहले, वीत्या स्मिर्नोव के सुझाव पर हमने ड्यूटी देनेवाले लड़कों के लिए एक नियमावली तैयार की।

हर दिन स्कूल ख़त्म होने के बाद दो लड़के हमारे पास आ जाते। मीश्का तथा मैं उनको बता देते कि क्या-क्या करना है और फिर शेष दिन के लिए इन्क्यूबेटर उनके सुपुर्द कर देते। बारी-बारी से वे थोड़ा समय निकालकर खाने के लिए घर जाते तथा अपना सबक तैयार करते। यह देखना भी उनके काम का ही हिस्सा था कि मीश्का और मैं पढ़ाई करने के बजाय कहीं इन्क्यूबेटर के इर्द-गिर्द ही तो नहीं मँडराते रहते हैं।

इसके बाद वीत्या ने टाइम-टेबुल बना दिया, जिससे हर किसी को पता रहे कि किस दिन उसकी ड्यूटी होगी। हमने इसे दीवार पर टाँग दिया।

''इसमें हमारे नाम क्यों नहीं हैं?'' मीश्का ने पूछा। ''क्या हमें बिल्कुल हटा दिया गया है?''

''रात का काम कौन करेगा?'' वीत्या ने उत्तर दिया। ''तुम लोग बारी-बारी से रात का काम करोगे।''

इसके बाद जेन्या ने सब लड़कों को भेज दिया। ''आज जो लड़के ड्यूटी पर हैं, उनको छोड़कर और सब चले जाएँ,'' उसने कहा। ''यों ही भीड़ लगाने की कोई ज़रूरत नहीं है।''

जेन्या, वीत्या, मीश्का और मेरे अलावा बाकी सब लड़के चले गए। ''तुम दोनों भी जाओ,'' जेन्या ने हमसे कहा.

''हम कहाँ जाएँ?''

''जाकर अपना सबक तैयार करो।''

''लेकिन यहाँ कुछ गड़बड़ हो गई, तो।''

''ऐसा कुछ नहीं होगा। और कुछ हुआ, तो मैं तुम्हें बुला लूँगा।''

''तब ठीक है। लेकिन देखो, कहीं भूल न जाना।''

इस तरह मीश्का को और मुझे पढ़ाई करने के लिए बैठना पड़ा। हमने अपना रूसी भाषा और भूगोल का काम किया और गणित का एक सवाल भी हल कर लिया। वैसे सवाल तो दो दिए गए थे, लेकिन दूसरा बड़ा कठिन था, इसलिए हमने उसको वैसा ही छोड़ दिया और रसोई-घर की खबर लेने गए।

''तुम यहाँ क्या कर रहे हो?'' जेन्या ने हमारे अन्दर आते ही पूछा। ''तुमसे सबक तैयार करने के लिए कहा गया था न?''

''हाँ, हाँ, हमने कर भी लिया।''

''कर लिया? ज़रा अपनी कॉपियाँ तो दिखाओ।''

''ऐं, यह क्या है'' मीश्का बोला। ''पूरी जाँच?''

''क्यों नहीं! हमने तुम्हारी देखभाल का ज़िम्मा लिया है, इसलिए तुम्हारे लिए हम जबावदेह हैं, समझे?'' हम अपनी कॉपियाँ ले आए।

''तुमने तो एक ही सवाल हल किया है और दिए दो गए थे।''

''हम बाद में उसे भी हल कर लेंगे।''

''बिल्कुल नहीं, तुम्हें अभी हल करना होगा। अगर तुमने उसे टालना शुरू किया, तो तुम उसके बारे में भूल जाओगे और फिर कल स्कूल बिना कुछ किए पहुँचोगे।''

''हमने एक सवाल तो कर लिया है, न?''

''एक करने से नहीं चलेगा,'' जेन्या ने दृढ़ता से कहा। ''तुम्हें यह कहावत मालूम है न – 'पहले काम, फिर आराम'।''

इसलिए हमें वापस जाकर उसी सवाल से माथापच्ची करनी पड़ी। हमने बड़ी कोशिश की, लेकिन सवाल हल न हो सका। हमने उस पर पूरा एक घण्टा लगाया और इसके बाद हम रसोई-घर में चले गए।

''वह हल नहीं हो रहा,'' मीश्का बोला। ''हर बात



हमने ठीक तरह से की है, लेकिन हमारा उत्तर पुस्तक के उत्तर से मेल नहीं खाता है। छपाई की भूल होगी और क्या?''

''बहुत अच्छे! किताब को ही दोष दो!'' जेन्या बोला।

''हाँ, इसके पहले भी कई बार पुस्तक का उत्तर गलत निकला है।''

''बकवास!'' जेन्या ने कहा। ''चलो, मैं देखता हूँ।''

वह हमारे साथ कमरे में आया और जो कुछ हमने किया था, देखने लगा। सवाल पर उसने भी बहुत सिर खपाया, हर चीज़ बिल्कुल ठीक जान पड़ती थी, लेकिन उत्तर सही नहीं आता था।

''मैंने क्या कहा था!'' मीश्का ने खुश होकर कहा।

लेकिन जेन्या ने कहा कि कहीं कोई गलती जरूर होगी और वह उसको पकड़कर ही रहेगा। उसने सवाल की फिर शुरू से जाँच की और आख़िर गलती ढूँढ ही निकाली। ''यह रही,'' वह बोला। ''सात सत्ते?''

''उनचास, और क्या?''

''बिल्कुल ठीक, लेकिन देखा, तुमने क्या लिखा है? इक्कीस!''

उसने गलती सुधारी और फिर उत्तर ठीक निकल आया। ''गलती सिर्फ इसलिए हुई कि तुम लापरवाह हो,'' उसने कहा और इन्क्यूबेटर की ओर लौट गया।

हमने अपनी कॉपियों में सवाल उतारा और हम फिर रसोई-घर लौट आए।

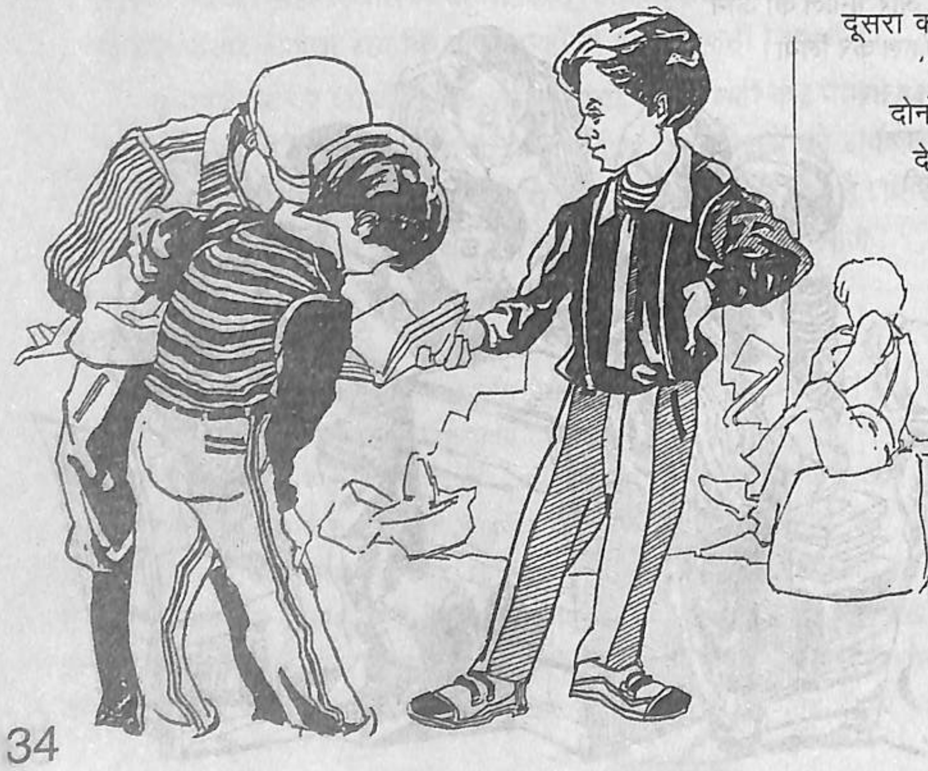
''सब पूरा हो गया।'' हमने कहा।

''शाबाश! जाओ, अब थोड़ा घूम आओ। बाहर की ताज़ा हवा लेना तुम्हारे लिए अच्छा रहेगा।''

न-नुकर करने का कोई फ़ायदा नहीं था, इसलिए मीश्का और मैं चले गए।

दिन बहुत अच्छा था। बाहर लड़के वॉली बॉल खेल रहे थे, हम उसमें शामिल हो गए। उसके बाद हम कोस्त्या देव्यात्किन के यहाँ गए। तभी वादिक जैत्सेव भी वहाँ आ गया। और शाम तक हम चारों लूडो और तरह-तरह के खेल खेलते रहे। जब हम घर पहुँचे, तो काफ़ी देर हो गई थी। हम सीधे रसोई-घर में गए और वहाँ जेन्या और वीत्या के अलावा वान्या लोज्किन को भी देखा। उसने कहा कि इन्क्यूबेटर पर रात को निगरानी रखने के लिए वह अपनी माँ से पूछ आया है।

''अरे यह क्या बात है!'' मीश्का बोला। ''ऐसा होता रहा, तो मुझे और कोल्या को कुछ भी करने का मौका नहीं मिलेगा। आज वान्या रात को काम करेगा, तो कल दूसरा कोई। ऊँ हूँ मुझे यह मंजूर नहीं।''



''ठीक है,'' वीत्या बोला। ''मैं तुम दोनों के नाम भी टाइम-टेबुल में रख देता हूँ, जिससे तुम्हें भी औरों की तरह बारी मिले।'' उसने हमारे नाम सूची में सबसे आख़िर में डाल दिए।

मीश्का और मैं हिसाब लगाने लगे कि हम दोनों की बारी कब आएगी और इससे पता चला कि हमारे हिस्से में आएगा सब से अच्छा दिन, इक्कीसवाँ दिन। वह दिन, जब चूज़ों को अण्डों से निकलना चाहिए!

(अगले अंक में जारी)

सभी चित्र : सौरभ दास

चिट्ठी लिखी

एकलव्य काफी लम्बे समय से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में कार्य कर रहा है। जिसकी गतिविधियाँ स्कूल एवं स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में चल रही हैं। एकलव्य ने भोपाल शहर में एक 'शैक्षिक बाल साहित्य संदर्भ स्रोत केन्द्र'' की स्थापना की है।

इसके द्वारा स्कूलों एवं स्कूलों के बाहर बच्चों, शिक्षकों के बीच में कुछ शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। जिनमें बाल मेला, पुस्तकालय कार्यक्रम, बाल–अखबार का सृजन एवं कार्यशाला आयोजित करना मुख्य है।

अभी हाल ही में भोपाल शहर के कोंपल स्कूल में एक बाल मेले का आयोजन किया गया। जिसमें कक्षा छठवीं व सातवीं के बच्चों ने भाग लिया। बाल मेले में विभिन्न गतिविधियों में एक गतिविधि पत्रलेखन की थी। जिसमें बच्चों ने बहुत ही सुन्दर ढंग से पत्रों को लिखा और पढ़कर सुनाया।

पत्र लिखने के लिए सभी बच्चों को पोस्टकार्ड के नमूने का एक–एक ड्राईंग सीट का टुकड़ा दिया गया। और कुछ उदाहरण देकर उनकी समझ बनाने के लिए बातचीत की गई। बच्चों से पूछा कि – तुम पत्र में क्या लिखना चाहोगे और किसके लिए पत्र लिखोगे। अधिकांश बच्चों के जवाब थे कि हम अपने अध्यापक को छुट्टी के लिए प्रार्थना पत्र लिखेंगे। कुछ बच्चों ने यह भी कहा कि हम अपने दोस्त या मम्मी–पापा को पत्र लिखेंगे। पत्र में मम्मी–पापा या दोस्त को क्या लिखोगे?

बच्चों का जवाब था – हमारी पढ़ाई अच्छी तरह से चल रही है। छमाही परीक्षा अगले माह में है। एक ने कहा– हम अपनी सहेली को बुलाने के लिए पत्र लिखेंगे।

उनके अपने आसपास क्या घट रहा है? नई चीजों का सृजन कैसे किया जाए? अपने अनुभवों को भी पत्र में लिखा जाना चाहिए। इस तरह की बातें उनको बताईं। जैसे हमने एक बार बच्चों को एक पत्र लिखा था –

प्रिय बच्चो,

इस समय मैं छतरपुर के एक पार्क में बैठा हूँ। इस पार्क में शाम का समय है। परिन्दें खूब उड़ रहे हैं। बच्चे खूब दौड़ लगा रहे हैं। एक बच्चा आईसक्रीम खा रहा है। उसके सारे कपड़े आईसक्रीम से गंदे हो रहे हैं पर बच्चे को इसकी कोई परवाह नहीं है। वह तो मज़े से आईसक्रीम खा रहा है।

मैं सोच रहा हूँ, काश तुम सब मेरे साथ होते तो कितना मजा आता।

तुम्हारा भैया

फिर क्या सभी ने फटाफट पत्र लिखना शुरू किया। किसी ने अपनी यात्रा का बखान किया तो किसी ने अपने मन से कोई कहानी या कविता बनाई, तो किसी ने काल्पनिक घटना को लिखने की कोशिश की है।

बच्चों ने पत्र में अपने आप पता लिखने के लिए जगह चुनी। डाक टिकिट का मोनो भी बनाया है। दो चुने हुए पत्र इस प्रकार है –

प्रिय सहेली साक्षी

कल हम लोग नेहरू पार्क गए थे। वह पार्क बहुत सुन्दर था। वहाँ बहुत–से चमगादड़ उड़ रहे थे। वहाँ फब्बारे थे। हमने वहाँ आइस्क्रीम खाई और फिर हम वहाँ घूमने लगे। वहाँ बहुत ठण्डीहवा चल रही थी। वहाँ बहुत से लोग बोट में घूम रहे थे। हम लोग भी बोट में बैठे। मेरी दीदी और पापा बोट को चला रहे थे। हमें वहाँ बहुत मज़ा आ रहा थां। रात होने के कारण हमें घर लौटना पड़ा। वहाँ हमें इतना मज़ा आया कि लौटने का मन नहीं कर रहा था। काश तुम भी वहाँ होती तो कितना मज़ा आता।

तुम्हारी प्रिय सहेली
भावना उपाध्याय

प्रिय मित्र

नमस्ते, आज दिनाँक 10.11.2000 को हमारे विद्यालय में एक सर आए हैं। वे हमसे एक बाल अखबार बनवा रहे हैं। उसमें मैं भी था। परन्तु अब वे आधे बच्चों से पत्र लिखवा रहे हैं, मुझे पत्र लिखना नहीं आता फिर भी पत्र लिखने की कोशिश कर रहा हूँ। अगर कोई गलती हो गई हो तो माफ कर देना। अब मैं अपना पत्र समाप्त कर रहा हूँ। बहुत लिख चुका हूँ इसलिए समझ नहीं आता और क्या लिखूँ। जब घर आओगे तो तुम्हें मैं विस्तार से बताऊँगा। धन्यवाद।

तुम्हारा मित्र मयंक सक्सेना

रपट : चन्द्रप्रकाश एवं अरविन्द

भूखा मुझे उठाया है।



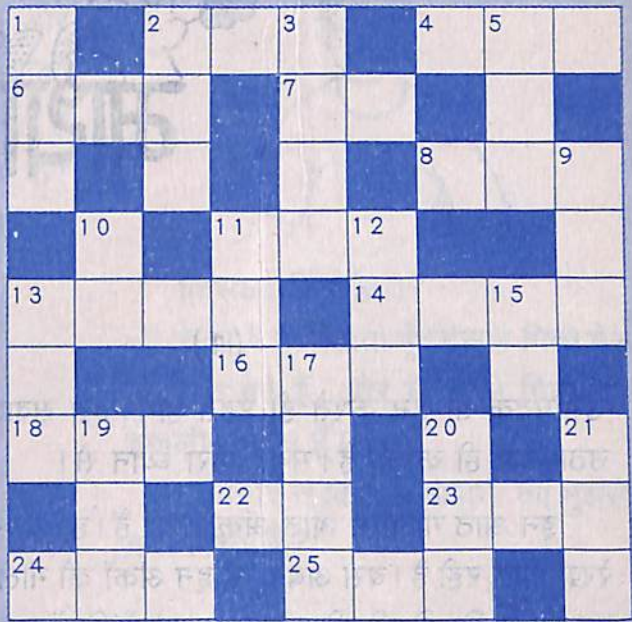
बीस कचौड़ी, पूड़ी तीस
दहीबड़े खाए इकतीस
तीन पाव रबड़ी खाई
खीर कटोरे भर आई

लाला सब कुछ खाकर के
बोले यों झल्लाकर के
पापड़ नहीं खिलाया है
भूखा मुझे उठाया है।

● डॉ. श्रीप्रसाद

● चित्र : तरुणदीप गिरधर

वर्ग पहेली - 113



संकेत : बाएँ से दाएँ

2. इच्छा है तो नाकाम नहीं होंगे (3)
4. साब ताली बजाने में है शक्कर की मिठाई (3)
6. एक गज़ल गायिका जो अब पॉप गाती है (3)
7. अजीबो-गरीब खेल, हाथ की सफाई के (2)
8. उत्तर भारत की वह नदी जिसके किनारे लखनऊ बसा है (3)
11. गरजत-बरसत में चाँदी (3)
13. रामायण की कहानी में राम गए थे 14 साल के लिए .... (4)
14. हर बार की काट-छाँट में पथ प्रदर्शक (4)
16. दर्शन (3)
18. छुई-मुई के पौधे का शर्माता हुआ दूसरा नाम (3)
22. एक मिठाई है, खाने से जान आ जाए (2)
23. कठोर के उलटफेर में चलते-चलते लग जाती है (3)
24. धान आदि का छिलका (3)
25. नहीं शरबत में से निकालो चाकू (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. भारतीय क्रिकेट टीम के एक भूतपूर्व कप्तान व कोच जिन पर मैच फिक्सिंग के आरोप थे (3)
2. नदी का जल, काला क्यों है? (3)
3. जाना यजमान में वह जो ठीक नहीं (4)
5. शिक्षा (3)
9. आगे........, पीछे........., बोलो कितने......, तरतीबी में छिपी चिड़िया (3)
10. रात के बाद और रात के पहले (2)
11. सरहद में है खाने की सामग्री (3)
12. सन्तरे के रस में दया ढूँढो (3)
13. मुकदमे की पैरवी करने वाला (3)
15. एक वाहन (2)
17. अभी चल रहा है वह महीना जिसमें रोजे रखते हैं (4)
19. भारत की प्राचीन कथाओं का एक समूह (3)
20. ठोकर लगी तो समझे कि पत्थर कैसा है (3)
21. धैर्य, सब्र (3)

सचिन सागर, किशनगंज, राजस्थान द्वारा भेजी गई वर्ग पहेली पर आधारित

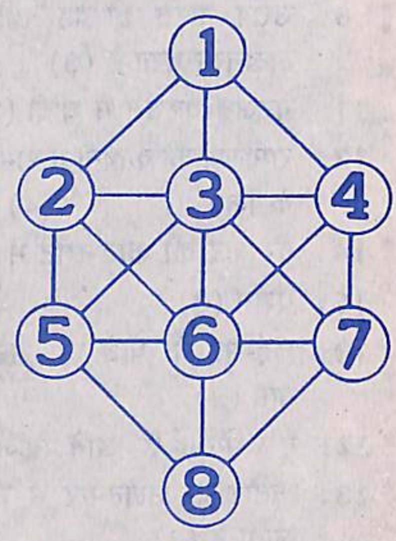
वर्ग पहेली - 113 का हल चकमक के फरवरी, 2001 अंक में छपेगा। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। संकेतों के नम्बर डालकर शब्द लिखकर भेज दें।

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का फरवरी, 2001 का अंक उपहार में भेजा जाएगा।



माथापच्ची

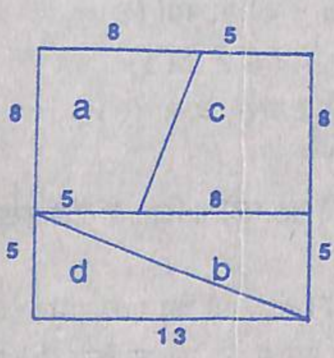
(1)



उठापटक तो तुम करते ही रहते होगे। इस सवाल में भी तुम्हें उठापटक ही करनी है। मगर ज़रा ध्यान से।

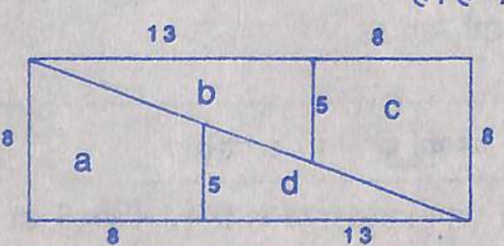
इन आठ गोलों में आठ अंक लिखे हैं। हर दो गोलों को एक रेखा जोड़ रही है। बस अब तुम्हें इन अंकों को गोलों में इस तरह जमाना है कि किसी भी लाइन के दोनों सिरों पर बने गोलों में लगातार आने वाले दो अंक नहीं आएँ। यानी कोई भी दो लगातार आने वाले अंक किसी लाइन से न जुड़े हों।

(2)



यह है 13 X 13 इंच का एक वर्ग। a, b, c, d इसके चार टुकड़े हैं। मुजीब ने इन चारों टुकड़ों को जोड़कर एक आयत बनाया जिसकी माप है 21 X 8 इंच।

13 X 13 इंच वाले वर्ग का क्षेत्रफल 169 वर्ग इंच होगा जबकि 21 X 8 इंच वाले आयत का क्षेत्रफल 168 वर्ग इंच होगा। यानी मुजीब ने 1 वर्ग इंच का गोलमाल किया है। है न? पर कहाँ, कैसे?



(3)

6, 24, 15, 60, 3, 12, 8, ?

आठ के बाद क्या?

भले ही पहली नजर में ये संख्याएँ बेतरतीब लगती हों। मगर इनमें एक रिश्ता है। थोड़े से गुणा-भाग से पता किया जा सकता है कि 8 के बाद क्या आएगा?

(4)

एक रेल्वें स्टेशन पर एक रेलगाड़ी खड़ी हुई थी। उसकी लम्बाई 500 मीटर थी। उसी समय वहाँ से एक और 100 मीटर लम्बी रेलगाड़ी तेज़ी से गुज़र गई। उसकी रफ़्तार क्या रही होगी पता नहीं। हाँ इतना ज़रूर पता है कि उसने खड़ी गाड़ी को सिर्फ़ 15 सेकण्ड में पार कर लिया। क्या इससे उस रेल की गति का अंदाज़ा लगाया जा सकता है? ज़रा लगाओ तो।

(6)

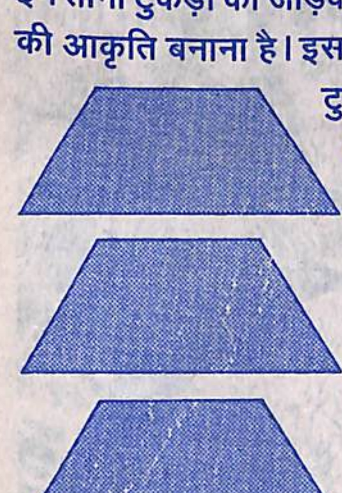
आसमान

ये हैं आसमान महाशय। कहने को सिर्फ़ 4 अक्षरों से बने हैं। मगर इन अक्षरों को अलग-अलग जोड़कर कितने ही अर्थ वाले शब्द बनाए जा सकते हैं। जैसे आस, समान, मान, आन सन, नस . . .।

क्या तुम सिर्फ़ पाँच मिनट में ऐसे पाँच शब्द ढूँढ सकते हो, जिनमें अक्षरों की संख्या से ज़्यादा अर्थ वाले शब्द छुपे हों?

(8)

इन तीनों टुकड़ों को जोड़कर एक पिरामिड की आकृति बनाना है। इसके लिए तुम इन टुकड़ों को एक कार्डशीट पर उतारकर काट लो। जब तुमसे यह हल हो जाए तो अपने दोस्तों से भी करवाकर देखना।



(5)



किसका चित्र है ये?

चलो मैं ही बताता हूँ। **इसके पिता मेरे पिता के बेटे हैं, और मैं अपने पिता का इकलौता बेटा हूँ।**

जान गए न कि इस आदमी का मुझसे क्या रिश्ता है?

(7)

पता नहीं ये तीन हाथी और तीन जिराफ कहाँ चले जा रहे हैं।

खैर, इन्हें जाने दो। बस तुम सिर्फ़ इतना पता लगाओ कि कौन-सा हाथी और कौन-सा जिराफ सबसे बड़ा है। सबसे आगे वाला या . . .।



एक भयानक रात की कहानी

3 दिसम्बर 1984 – इस तारीख को कोई भी भूल नहीं सकता है। बल्कि यह कहना चाहिए कि इसे भूलना नहीं चाहिए। तुममें से कई तो इसके बारे में जानते होंगे, हो सकता है कुछ नहीं भी जानते हों। इसीलिए इसके बारे में फिर दोहराना चाहेंगे।

2 दिसम्बर 1984 की रात को भोपाल में बनी यूनियन कार्बाइड की फैक्ट्री से अचानक एक ज़हरीली गैस निकलने लगी। यह ज़हरीली गैस भोपाल शहर के लगभग आधे इलाके पर फैल गई। लोग खाँसते हुए नींद से जागने लगे। जो बस्तियाँ फैक्ट्री के बिल्कुल पास हैं उनमें तो कितने ही लोगों को जागने का भी मौका नहीं मिला।

रात के कोई दो बजे होंगे जब हम नींद से जागे। चारों तरफ अफ़रा-तफ़री मची थी। सब अपने-अपने घरों से निकलकर भागने में लगे थे। जिसको जो सवारी मिली उसी पर चल दिया। कहाँ, किसी को पता नहीं था। तब तक तो यह भी पता नहीं था कि यह हुआ क्या है। कोई नहीं जानता था कि किस ओर जाएँ तो बच पाएँगे।

जब हम घर से निकलकर बाहर आए, सड़क पर हर दिशा में लोग आ-जा रहे थे। कितने ही लोग सड़कों पर गिरे पड़े थे। पता नहीं उनमें से कितने बेहोश थे और कितने मर चुके थे।

हमने सीधे अस्पताल जाना ही ठीक समझा। अस्पताल से ज़्यादातर डॉक्टर भी जा चुके थे। जो मरीज़ चल-फिर नहीं सकते थे वे ही वहाँ थे, बाकी मरीज़ भी चले गए थे। चारों तरफ लोग खाँसते हुए, आँखें मलते हुए, मरते हुए दिख रहे थे। जो डॉक्टर या अस्पताल के कर्मचारी वहाँ थे उन्होंने पानी से भरकर कुछ बल्टियाँ रखवा दी थीं कि पानी से आँखें धो ली जाएँ। किसी को भी पता नहीं था कि इस ज़हरीली गैस का इलाज कैसे होगा, क्या होगा।

3 दिसम्बर 1984 की सुबह भोपाल में लाशों का ढेर लगा हुआ था। कब्रिस्तान और शमशान में मरे हुए लोगों को एक साथ दफ़नाया और जलाया गया। अस्पतालों में बीमारों की भीड़ थी। हज़ारों लोग एक ही रात में मौत की नींद सो गए।

इस ज़हरीली गैस का नाम भी जान लो। यह थी मिथाइल आइसो सायनेट। यूनियन कार्बाइड में रखरखाव की गड़बड़ी के कारण इतनी बड़ी घटना हुई। भोपाल के गैस पीड़ित लोग इस अमेरिकी कम्पनी से अपने हक की लड़ाई आज भी लड़ रहे हैं।

इतना ही नहीं इस ज़हरीली गैस के कारण बीमारी में घिरे लोग आज भी कई तरह की तकलीफ़ें उठा रहे हैं। कुछ ऐसी बीमारियाँ जो पहले बहुत कम होती थीं अब आमतौर पर दिखाई देती हैं जैसे टी. बी., कैंसर आदि। इतने साल बाद आज भी इस गैस से हुई तकलीफ़ों का इलाज कोई ठीक तरह से नहीं जानता है।

यह एक ऐसी भयानक घटना थी जो विज्ञान को लापरवाही और गलत तरीके से इस्तेमाल करने के कारण घटी। इसके बाद इन्सानों की जान का मुआवज़ा भी दिया गया, बीमारों के इलाज की व्यवस्था भी की गई। इसमें बहुत गड़बड़ियाँ भी हुईं। लेकिन ये गड़बड़ियाँ न भी होतीं, तो भी इस घटना में हुए नुकसान की भरपाई कभी भी नहीं हो सकती। हाँ इतना ज़रूर कर सकते हैं कि इसे याद रखें, ताकि आगे ऐसी घटना न घटने पाए।

क्या तुम ऐसी भयानक रात को भूल सकते हो, भले ही तुमने उसे न देखा हो, सिर्फ उसके बारे में सुना ही हो?

● कविता सुरेश



चित्र : 'निरन्तर' के सौजन्य से
चित्रकार : ऑरिजीत सेन



● आमिर, चौथी, भोपाल, म.प्र.

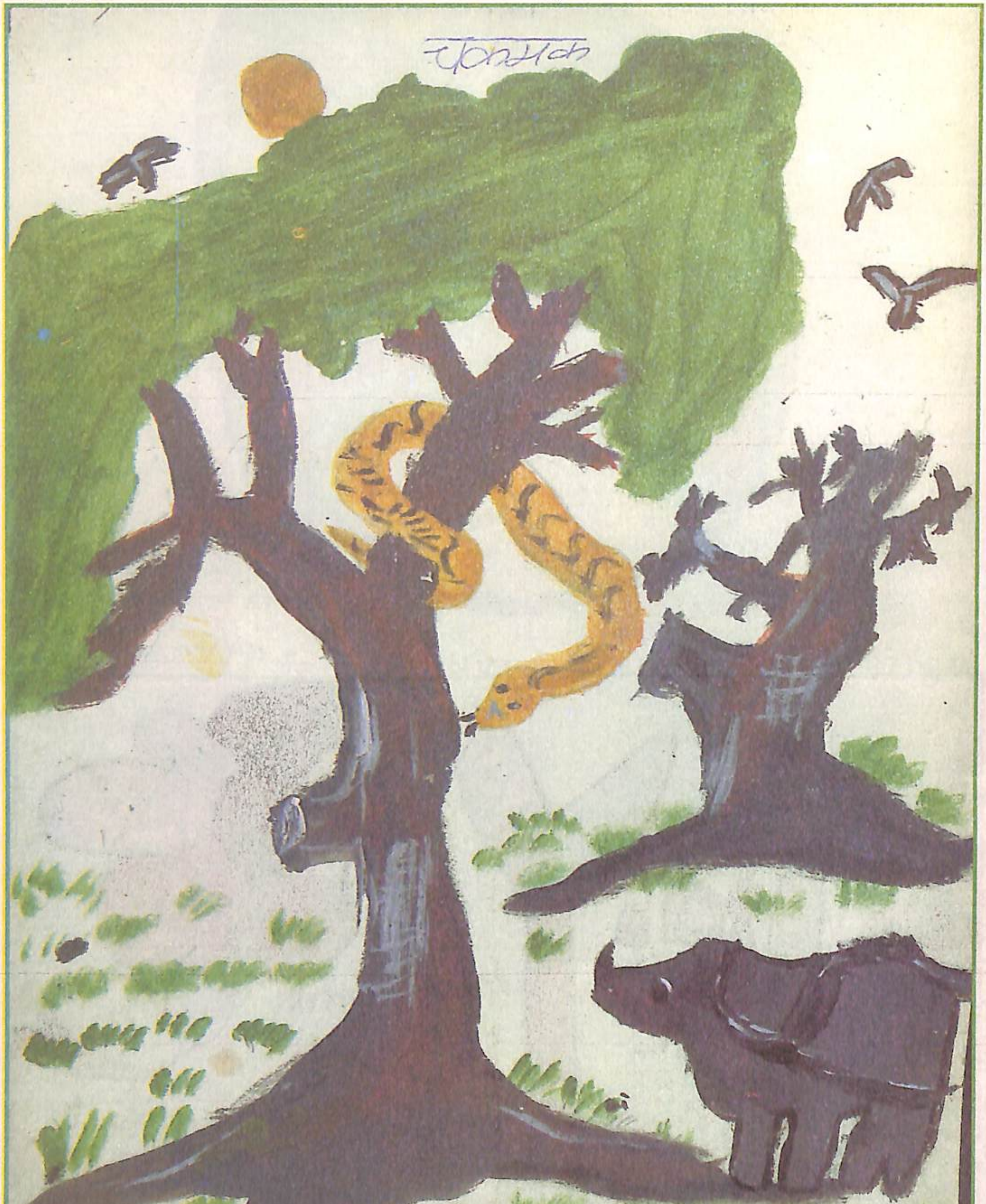


● शीरिन, पाँच वर्ष, जयपुर, राजस्थान

रेक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।

संपादक : विनोद रायना

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र./261/भोपाल/2000



● सैयद अजहर अली, सातवीं (पता नहीं लिखा)